अतुल्य भारत

वर्ष: 7 संयुक्त अंक : मार्च, 2023 तक

पर्यटन मंत्रालय की त्रैमासिक गृह पत्रिका
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार
नई दिल्ली

थिकसे मठ, लेह

सूरजकुंड मेला, हरियाणा

अतुल्य भारत

।। पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक गृह पत्रिका।।

संरक्षक : **सुश्री वी. विद्यावती, सचिव, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार**

प्रधान संपादक एवं परामर्शदाता : श्री ज्ञान भूषण, वरिष्ठ आर्थिक सलाहकार,
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

सहायक सम्पादक : श्री मनोज कुमार दूबे, सहायक निदेशक (राजभाषा)

मानद संपादन : श्री मोहन सिंह

अन्य सहयोगी : सुश्री प्रज्ञा भास्कर, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, पर्यटन मंत्रालय

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक द्वारा व्यक्त किए गए हैं। भारत सरकार, पर्यटन मंत्रालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पत्रिका में प्रयुक्त अधिकांश चित्र लेखकों द्वारा उपलब्ध कराए गए हैं और कुछ 'गूगल' तथा अन्य वेबसाइटों तथा व्यक्तियों से लिए गए हैं, जिनका उपयोग करने के लिए सभी का साभार धन्यवाद ज्ञापित है।

कृपया अपने लेख एवं सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें :
संपादक, अतुल्य भारत,
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार,
7वां तल, चन्द्रलोक बिल्डिंग,
36, जनपथ,
नई दिल्ली - 110001.
ई-मेल- editor.atulyabharat@gmail.com

पर्यटन से संबंधित गंतव्यों और सूचनाओं के प्रचार हेतु

अतुल्य भारत

वर्ष: 7 संयुक्त अंक : मार्च, 2023 तक

इस अंक में...

3.	**35.**
सचिव महोदया का संदेश	**रूसी कहानी : अपराधी** -सुशांत सुप्रिय
4.	**40.**
प्रधान सम्पादक की कलम से	**धरती पर एक स्वर्ग** **-डा. सुशांत कुमार सेनापति**
6.	**49.**
फूलों की घाटी 'केशकाल' -श्रीमती रजनी शर्मा बस्तरिया	**आस्था और विरासत का शहर : दतिया** **-मोहन सिंह**
21.	**62.**
कुछ अन्जाने पर्यटन स्थल : नेल्लूरू - राज कुमार	**पर्यटन के अज्ञात गंतव्य : सिमडेगा : राम रेखा धाम -कैप्टन प्राण रंजन**

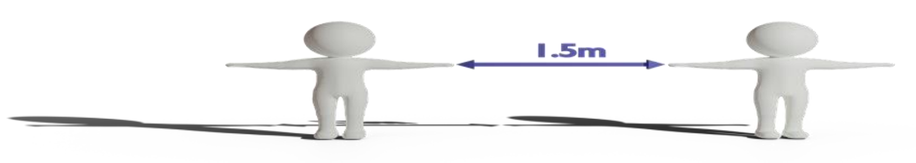

दो गज की दूरी है अभी जरूरी

॥ सचिव का संदेश ॥

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की गृह पत्रिका 'अतुल्य भारत' का यह समेकित अंक आपके सामने प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका अधिकारियों तथा कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी के माध्यम से अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति का एक मंच प्रदान करती है। साथ ही अन्य लेखकों एवं विद्वानों की रचनाओं को भी इस पत्रिका में शामिल किया गया है।

मुझे आशा है कि पिछले अंकों की तरह यह अंक भी उपयोगी और सार्थक सिद्ध होगा।

सभी लेखकों तथा पाठकों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं हैं जो इस पत्रिका के लिए निरंतर अपना सहयोग प्रदान करते रहे हैं।

वी. विद्यावती
सचिव (पर्यटन)

परामर्शदाता एवं प्रधान सम्पादक
ज्ञानभूषण, आई.ई.एस.
वरिष्ठ आर्थिक सलाहकार
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

✍ प्रधान सम्पादक की कलम से

'अतुल्य भारत' का यह संयुक्त अंक आपके सामने हैं। कुछ अपरिहार्य कारणों से यह संयुक्त अंक प्रस्तुत किया जा रहा है। हमारा प्रयास रहता है कि पर्यटकों को देश के कम ज्ञात पर्यटन क्षेत्रों के बारे में अधिक से अधिक जानकारी दी जाए।

सबसे पहले बात करें छत्तीसगढ़ के बस्तर की। बस्तर हर दृष्टि से राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन के मानदंडों को पूरा करता है। यहां की घाटियों में ऐसे अनेक ज्ञात-अज्ञात पर्यटन स्थल हैं, जहां आपको भारत के किसी भी प्रसिद्ध हिल स्टेशन से कुछ अच्छे ही नजारे देखने को मिलते हैं। वन्य पशुओं की दहाड़, मलय समीर-सी शीतल हवाएं और उन्मुक्त आदिवासी जीवन शैली मन को एक नए रोमांच से भर देती है। इस रमणिक स्थल का प्रवेश द्वार है, केशकाल की घाटी। शिखर तक जाने के लिए पांच कि.मी. लम्बा और 12 घुमावदार तीखे मोड़ वाला मार्ग पर्यटकों को उत्साह के साथ रोमांच से भी भर देता है। बस्तर की जानी मानी लेखिका सुश्री रजनी शर्मा बस्तरिया ने अपने आलेख 'फूलों की घाटी 'केशकाल'' में इस रहस्यमयी स्थान के बारे में जानकारी दी है।

आंध्र प्रदेश का नेल्लूरू शहर, जो अभी तक अधिकतर भारतीयों के लिए लगभग अंजाना सा शहर है। कम से कम घरेलू पर्यटक तो यहां आने के लिए शायद ही विचार करते हों, जबकि यह आंध्र प्रदेश का चौथा सबसे बड़ा नगर है। इसे भारत की मत्स्यपालन की राजधानी होने का श्रेय प्राप्त है। इसके अलावा यहां विश्व प्रसिद्ध मंदिर, ऐतिहासिक यादगार के रूप में मौजूद किले और स्मारक, नेलापट्टु पक्षी अभयारण्य और पुलिकट झील यहां के प्रमुख आकर्षण हैं। इस शहर में प्राचीन काल के अनेक महत्वपूर्ण मंदिर भी हैं। नेल्लूरू जैसे अल्प ज्ञात और सुन्दर शहर के बारे में श्री राज कुमार ने अपने आलेख ''कुछ अन्जाने पर्यटन स्थल : नेल्लूरू'' में सुधि पाठकों के लिए जानकारी प्रस्तुत की है। लेह एवं कारगिल में बंटे लद्दाख में सिन्धु नदी के जल का रंग नीला तथा ज़ंस्कार नदी के जल का रंग मटमैला यानि इनके संगम का अद्भुत दृश्य मन को आश्चर्य से भर देता है। चांग ला पास और गुरूद्वारा पत्थर साहब के निकट प्रकृति के मनोरम

दृश्य दिल छू लेते हैं। पर्वतीय मार्ग पर श्योक नदी के साथ कच्चे-पक्के रास्तों से पांगोंग झील पर जाना एक अलग ही अनुभूति है। लद्दाख जाने वाले पर्यटकों के लिए डा.सुशांत कुमार सेनापति ने अपने आलेख ''धरती पर एक स्वर्ग'' में विशेष परामर्श भी प्रस्तुत किए हैं।

मध्य प्रदेश के दतिया शहर में धार्मिक स्थलों के अलावा भी पर्यटकों के लिए बहुत कुछ है। यहां का विश्व प्रसिद्ध पीताम्बरा पीठ यानि बगलामुखी देवी का मंदिर धार्मिक भक्तों के लिए एक संपन्न तीर्थस्थान है। सोनगिरि की पहाड़ी एक प्रसिद्ध जैन तीर्थ है। जैन संस्कृति के प्रतीक इस तीर्थस्थल को प्रकृति ने अपनी भरपूर छटा से संवारा और आध्यात्म ने इसे तपोभूमि बनाकर निर्वाण का सिद्ध क्षेत्र बनाया है। दतिया का वीर सिंह पैलेस के नाम से प्रसिद्ध सतखंडा महल पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र रहा है। उनाओ में प्रागैतिहासिक काल का प्राचीन सूर्य मंदिर है। शहर से 60 कि.मी. दूर एक बेहद ही खुबसूरत पर्यटन स्थल सेवढ़ा में कन्हार गढ़ दुर्ग, माता मांडुला देवी का मंदिर, सिंध नदी के किनारे सुन्दर झरने और प्राकृतिक शांत वातावरण पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। निकट ही घने जंगल में, रतनगढ़ माता मंदिर को देश का सबसे भारी 1935 कि.ग्रा. का पीतल का घंटा लगा होने का गौरव प्राप्त है। श्री मोहन सिंह ने ''आस्था और विरासत का शहर'' शीर्षक से इस क्षेत्र के आसपास बिखरे अप्रतिम प्राकृतिक सौंदर्य, प्राचीन धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहरों को रेखांकित किया है।

झारखंड राज्य में पहाड़ियों से घिरे सिमडेगा में अनोखे धार्मिक स्थलों के साथ ही नदी बांध और वन्यजीव अभयारण्य हैं। यहां का रामरेखा धाम इस क्षेत्र का सबसे महत्वपूर्ण लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। संयोगवश, हम अभी तक इसकी खूबसूरती से अंजान है। प्राकृतिक सुंदरता, कई पर्या-पर्यटन स्थलों, पौराणिक और ऐतिहासिक विरासतों को अपने में समाएं हुए, सिमडेगा देश- विदेश के पर्यटकों को आकर्षित करता है। कैप्टन प्राण रंजन ने अपने आलेख ''पर्यटन के अज्ञात गंतव्य : सिमडेगा : रामरेखा धाम'' में जानकारी प्रस्तुत करते हुए, सरकार द्वारा इस क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किए गए विकास कार्यों का भी उल्लेख किया है। इनके अलावा, श्री सुशांत सुप्रिय द्वारा प्रस्तुत एंटन चेखव की रोचक कहानी ''अपराधी'' को भी समाहित किया गया है।

''अतुल्य भारत पत्रिका'' पर्यटन के क्षेत्र में अपना योगदान दे रही है और इसके माध्यम से मंत्रालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को अपनी प्रतिभा दर्शाने का अवसर मिलता है। अंत में, इस पत्रिका के लिए निरंतर अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सभी लेखकों तथा पाठकों का आभार व्यक्त करता हूं। आपके विचारों तथा प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा।

ह/-

(ज्ञान भूषण)

प्रधान संपादक

बस्तर

फूलों की घाटी 'केशकाल'

*श्रीमती रजनी शर्मा बस्तरिया

मानव मन जब क्लांत व थकित हो जाए तब ढूंढता है विश्राम के दो क्षण, बिस्तर तन की थकान को भले दूर कर दे, लेकिन जब मन को स्फूर्ति व ताजगी देनी हो तो किसी रमणीक स्थल की ओर निकल जाना ही बेहतर होता है। यूं देखें तो, भारत भूमि के पर्यटन स्थल, विदेशी सैलानियों के लिए स्वर्ग की सैर के समान रहे हैं। किसी मुगल सम्राट ने कश्मीर को स्वर्ग कहा, कुछ ने पचमढ़ी को पहाड़ों की रानी, कुल्लू- मनाली, शिमला, मसूरी, नैनीताल और जाने कितने रमणीय स्थल हैं जहां आकर - उनके प्राकृतिक तथा नैसर्गिक मनोहारी दृश्यों में मन खो जाता है

लेकिन यदि आपके पास समय और सुविधा है और पर्यटन का भरपूर आनंद लेना चाहते हैं, तो चले आइये...और बस्तर के मनोहरी दृश्यों में खो जाइये.... यहां आपको वह सब कुछ मिलेगा, जो किसी भी स्तरीय पर्यटन स्थल में मिलता है। फिर भी कुछ अभाव खटकता है तो सिर्फ एक... यहां हिमपात का नजारा नहीं लिया जा सकता। लेकिन ठंड के दिनों में हाथ को हाथ सुझाई न देने वाला घना कोहरा अंतर्मन को वैसी ही ठंडक दे जाता है।

घने वन प्रांतर में बांसों के झुरमुट और रवि रश्मि को भी तरसती ऊंची पहाड़ियों से कल-कल का नाद करती शुभ्र जलप्रवाहिनीयां। तिमिर श्रृंगार से सुसज्जित गिरि-गुफाएं, एकाएक ऊंचाई से पिघली चांदी को उंडेलते जलप्रपात, आकाश को स्पर्श करती घाटियां और इन घाटियों में बिखरी नयनभिराम हरीतिमा तथा इसी नैसर्गिक धरोहर में बसी-बिखरी बाँस, लकड़ी से बनी झोपड़ियां और उन्मुक्त ढंग से जीवनयापन करती आदिवासी जीवन शैली तथा आदिम संस्कृति की झांकी - बस्तर जिले की भौगोलिक बीहड़ता में तलाश करें तो आपका मन एक नए रहस्य-रोमांच से भर उठेगा।

यदि छत्तीसगढ़ के बस्तर को स्वर्ग कहा जाए तो बस्तर में स्थित केशकाल बस्तर की हरीतिमा की रानी है। इसलिए बस्तर में स्थित केशकाल को फूलों की घाटी कहना गलत नहीं है। बस्तर में रखा हर कदम पर्यटन के मानदंड को पूरा करता है। यहां के घने जंगल में दहाड़ते वन्य पशु, मलय समीर-सा सुख देती शीतल बयार पर्यटकों के लिये आकर्षण का कारण बनते रहे हैं। यहां की घाटियों में अनेक ज्ञात-अज्ञात पर्यटन स्थल हैं और अरण्य भ्रमण दलों के सदस्यों ने बस्तर के विभिन्न अंचलों का खोजी भ्रमण कर प्रकृति के अनेक रहस्यों को उजागर करने का प्रशंसनीय प्रयास किया है। बस्तर के व्यवस्थित पर्यटन स्थलों का अपना अलग ही महत्व है।

पर्यटन की दृष्टि से बस्तर की केशकाल घाटी को नैसर्गिक सौंदर्य का प्रवेश द्वार माना जाता है। वैसे तो बस्तर का प्रवेश द्वार चारामा घाटी भी है, जहां से हरीतिमा युक्त वनक्षेत्र और वन्य प्राणी आपके मन को आकर्षण के पाश में निबद्ध करने लगते हैं, वहीं बस्तर का पठारी भूभाग चारामा घाटी की चढ़ाई के लिए सैलानियों को प्राकृतिक सौंदर्य का संकेत देती है। बारह तीखे मोड़ सहित कई सर्पीली घुमावदार सड़क के लिए प्रसिद्ध केशकाल घाटी के किसी भी भाग में खड़े होकर चारों ओर निहारना अपने आप में एक अनूठा अनुभव प्रदान करता है। अद्भुत सौंदर्य के लिए मशहूर फूलों की घाटी की संज्ञा से विभूषित केशकाल घाटी, नैसर्गिक सौंदर्य का खजाना लिए अलग-अलग आकार की पहाड़ियों की श्रृंखला में कतारबद्ध होकर मानो बस्तर आगमन पर सैलानियों का स्वागत कर रही है।

सुरम्य घाटी केशकाल की : कोण्डागांव जिले की केशकाल तहसील में सुरम्य एवं मनोहरी केशकाल घाटी राष्ट्रीय राजमार्ग 30 पर कोण्डागांव - कांकेर के मध्य स्थित है। केशकाल घाटी घने वन क्षेत्र, पहाड़ियों तथा खूबसूरत घुमावदार मोड़ों के लिए प्रसिद्ध है। इसे तेलिन घाटी के नाम से भी जाना जाता है। इस घाटी के मध्य से गुजरने वाला पांच कि.मी.से कुछ अधिक का राजमार्ग तथा इस पर स्थित 12 घुमावदार तीखे मोड़ पथिकों के मन में उत्साह के साथ रोमांच भी भर देते हैं। मार्ग के किनारे तेलिन माता का मंदिर स्थित है और उससे कुछ दूरी पर माता भंगाराम मांई (जिसे न्याय की देवी माना जाता है) का पवित्र स्थल स्थित है। तेलिन सती मां मंदिर में रुक कर माता का दर्शन तथा क्षणिक विश्राम के बाद ही यात्री अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान करते हैं।

112 साल पुरानी इस घाटी में 12 गहरे मोड़ बने हैं जो बेहद खतरनाक हैं।

केशकाल से कांकेर की ओर नगर सीमा से बाहर निकलते ही पांच कि.मी. की रोमांचकारी यात्रा वाली सर्पाकार घाटी है, जिसके मोड़ बहुत तीखे हैं। अब तो सड़क चौड़ी हो गई हैं। अन्यथा देश की आजादी से पहले लोग, पैदल ही इस मार्ग से आना जाना करते थे। जब इस घाटी पर सड़क का निर्माण किया गया, सड़क की चौड़ाई बहुत कम थी। पतली सी सड़क के मार्ग में एक तरफ ऊंचे पहाड़, दूसरी ओर सैकड़ों फीट गहरी खाई, उस पर कई जगह पर मोटरगाड़ी को बार-बार आगे-पीछे करने के बाद ही तीखे मोड़ों से होकर गाड़ियां गुजर पाती थीं।

बारह मोड़ वाली इस सर्पाकार घाटी के सबसे ऊपरी भाग में वन विभाग द्वारा पंचवटी का निर्माण करवाया गया है, जो पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। पंचवटी परिसर में ही ''फायर वॉच'' के नाम से एक विशाल टॉवर बनाया गया है, इस टावर के ऊपर से केशकाल घाटी का संपूर्ण दर्शन किया जा सकता है। छोटी-बड़ी पहाड़ियों की वनाच्छादित श्रृंखला बने वन कुंज, दूर-दूर तक फैली हुई हरीतिमा, पर्यटकों के लिए नयनाभिराम दृश्य प्रस्तुत करती है। क्या बसंत, ग्रीष्म, हेमंत, या पावस सभी ऋतुओं में मानो नैसर्गिक छटा व मनोहारी प्राकृतिक छवि को सृजनकर्ता ने पूरी तरह उड़ेल दिया हो, इस घाटी में फूलों की महक अंतर्मन तक को महका देती है। खुले मौसम की चांदनी रात में पंचवटी के वॉच टावर या पंचवटी परिसर से अनोखा सौंदर्य निखरता है। विभिन्न प्रकार के पुष्पीय पादप भी रोपित किए गए हैं, जो आकर्षण का केन्द्र है।

केशकाल घाट के बारे में :

अंग्रेजों ने 1910 में इस घाटी पर सड़क बनवाई थी। बस्तर और दक्षिण भारत से समूचे छत्तीसगढ़ को जोड़ने वाली इस अकेली सड़क पर है केशकाल घाटी। राष्ट्रीय राजमार्ग 43 पर रायपुर से 269 कि.मी. दूर एवं जिला मुख्यालय जगदलपुर से 128 कि.मी. दूर, समुद्री सतह से 2250 फीट की ऊंचाई पर स्थित है।

एक किवदंति है कि बस्तर के महाराज भौरम देव के राज्य में अंतिम सीमा पर बसे केशकाल को केशलू नामक व्यक्ति ने बसाया था। केशलू बहुत बहादुर था, वह जंगल में शेर से लड़ते हुए मारा गया, तब इस गांव का नाम केशलू काल पड़ गया, कालांतर में यही केशकाल नाम से जाना जाने लगा। केशकाल जिस घाटी के पास बसा हुआ है, उस घाटी को पहले मेडका घाटी कहा जाता था, पांच कि.मी. लंबी इस घाटी पर तत्कालीन मालगुजार कुंवर लुनिया ने आवागमन हेतु अरंडी, फ्लौरा, लेराफ्लौरा, धनौरा, मुखेंड होते हुए मार्ग का निर्माण करवाया है जो बहुत दुर्गम था। घने जंगलों से भरे इस मार्ग पर एक स्थान पर अक्सर शेर, तेंदुए, जैसे खतरनाक जीव देखे जाते थे। यह भाग इतना संकरा था कि इस घाटी से गुजरते हुए कंपकंपी छूट जाती थी।

कोंडागांव का पुरा वैभव : कोपाबेड़ा स्थित शिव मंदिर:- कोपाबेड़ा स्थित शिव जी का विलक्षण मंदिर, कोण्डागंव से लगभग पांच कि.मी. दूर नारंगी नदी के पास स्थित है। यहां पहुंचने के लिए साल के घने वृक्षों के बीच से होकर गुरजना पड़ता है। प्राचीन दण्डाकारण्य का यह क्षेत्र रामायण कालीन बाणासुर का क्षेत्र माना जाता है। अब पूरे क्षेत्र में सामान्य तौर पर शाक्य और शैव मतावलंबी पाए जाते हैं। इस अंचल में शैव से संबंधित जितने भी मंदिर है, उन मंदिरों में स्थापित शिवलिंगों के संदर्भ मे रोचक तथ्य देखने को मिलता है। यह रोचक तथ्य है शिवलिंगों का स्वप्न मिथक से जुड़ा होना। कोपाबेड़ा का मंदिर भी इससे अछुता नहीं है। जनश्रुति है कि 1950-51 के आसपास एक भक्त को स्वप्न में इस शिवलिंग के दर्शन हुए थे। स्वप्न के आधार पर ही उसने इसे खोज निकाला और पास के जंगल में इसे स्थापित किया। पूजन की परंपरा यह है कि नदी के किनारे गांव के देवस्थान को राजाराव के नाम से जाना जाता है और उसकी पूजा सर्वप्रथम की जाती है। कहा जाता है कि इस शिवलिंग के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि जब यह प्राप्त हुआ था, तब यह काफी छोटा था किन्तु वर्तमान में इसका आकार काफी बड़ा हो गया है। ऐसी मान्यता है कि सावन के महीने में यहां नागसर्प के जोड़े की मौजूदगी देखी जा सकती है, जो आश्चर्य कर देने वाली घटना है। प्रत्येक शिवरात्रि को यहां एक बड़ा मेला लगता है।

मुलमुला : तहसील कोण्डागांव शामपुर माकड़ी को जाने वाले मार्ग पर चिपावंड ग्राम से लगभग पांच कि.मी.की दूरी पर मुलमुला स्थित है। इस गांव से लगभग तीन कि.मी. अंदर सुरक्षित वन क्षेत्र में मुलमुला एवं काकरावेड़ा जंगल में मसूर देव नामक स्थल है। वर्तमान में यहां कई प्राचीन टीले हैं इन टीलों के पास ही एक शिवलिंग है। चूंकि यह शिवलिंग लम्बाई में मसूर की आकृति का है, जो दो भागों में विभक्त है जिसका माप 135×20×19 से.मी. है जिसके कारण स्थानीय लोग इसे मसूर देव के नाम से जानते है। प्रथम टीले से लगभग 50 मीटर की दूरी पर दक्षिण दिशा में स्थित है पुरातत्व विभाग द्वारा की जा रही खुदाई में, ईंटों से निर्मित दीवारें स्पष्ट दिखाई देती है। यहां पर बिखरी पड़ी ईटों की माप 34×17×7 से.मी. है। इसके अतिरिक्त कोण्डागांव जिले में अनेक स्थल हैं, जिनका पुरातात्विक व धार्मिक महत्व है।

आराध्य मां दंतेश्वरी - बडे डोंगर :- फरसगांव से मात्र 16 कि.मी. दूरी पर रचा बसा चारों ओर पहाड़ियों से घिरा यह क्षेत्र बडे डोंगर अपने इतिहास का बखान कर रहा है। आज इस क्षेत्र की चर्चा सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ राज्य में है। बस्तर की आराध्य देवी मां दंतेश्वरी का निवास स्थान प्रमुख रूप से मंदिर दंतेवाड़ा है। पहले कभी बस्तर की राजधानी बडे डोंगर में माई के प्रमुख पर्व दशहरे का आयोजन इसी मंदिर से आरम्भ होता था। कथा प्रचलित है कि इसी स्थान पर दंतेश्वरी से महिषासुर नामक दैत्य का संग्राम हुआ था। बडे डोंगर में पुराने समय में 147 तालाब पाए गए थे जो इसे विशेष रूप से तालाबों की पवित्र नगरी के नाम से विख्यात करते है।

भोंगापाल : जिले के फरसगांव तहसील के बड़े डोंगर क्षेत्र में भोंगापाल गांव स्थित है। यहां भीमौर्य युगीन तथा गुप्तकालीन ऐतिहासिक टीले एवं अवशेष हैं। भोंगापाल, बंडापाल, मिसरी तथा बड़गई ग्रामों के मध्य बौद्धकालीन टीले एवं अवशेष पाए गए हैं।

भोंगापाल में पक्की ईंटों से निर्मित विशाल प्राचीन चैत्य मंदिर भी है। इतिहासकारों का अनुमान है कि चूंकि यह स्थान प्राचीन काल से ही दक्षिणी राज्यों को जोड़ने वाले मार्ग पर स्थित रहा है। अत: कहा जाता है कि यह चैत्य बौद्ध भिक्षुओं के धर्म प्रचार-प्रसार एवं निवास का प्रमुख केन्द्र रहे थे। इसके समीप एक अवशेष के पास सप्तमातृका का मंदिर और उनकी प्रतिमा है, जिसमें एक ही शिला पर खुदाई करके वैष्णवी, कौमारी, इंद्राणी, माहेश्वरी, वाराही, चामुण्डा तथा नरसिंही देवी माताओं की प्रतिमाएं सुन्दर शैलकला से बनाई गई हैं।

जटायु शिला: जटायु शिला फरसगांव के समीप मुख्य मार्ग से पश्चिम दिशा में तीन कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहां पहाड़ी के ऊपर बड़ी-बड़ी शिलाएं है। कहा जाता है कि इसी स्थान पर रामायण काल में सीता जी के हरण के दौरान रावण एवं जटायु के मध्य संघर्ष हुआ था। शिलाओं से दूर-दूर तक मनोहारी प्राकृतिक दृश्य दिखायी देते हैं।

माता लिंगेश्वरी मंदिर, आलोर :

यह छत्तीसगढ़ में ही नहीं, सम्भवत: पूरे देश में एक ऐसा अनोखा मंदिर, जहां वर्ष में केवल 12 घंटे के लिए कपाट खुलते हैं। यह जानकर बाहरी पर्यटक सोच में पड़ जाते हैं। फिर भी ऐसा माना जाता है कि मंदिर में मांगी जाने वाली हर इच्छा पूरी होती है। पूरे साल भर में सिर्फ बारह घंटे के लिए ही खोला जाने वाला, यह है माता लिंगेश्वरी का अनोखा मंदिर। यह ग्राम पंचायत आलोर फरसगांव में पड़ता है। ग्राम की दायीं दिशा में अत्यंत ही मनोरम पर्वत श्रृंखला है और इस पर्वत के हरे-भरे जंगल के बीचों बीच, धरातल से लगभग 100 मी. की ऊंचाई पर प्राचीन

काल में स्थापित मां लिंगेश्वरी देवी अपने मंदिर में विराजमान है। इस मंदिर में भगवान शिव और पार्वती की मूर्तियां भी स्थापित है।

विद्वानों द्वारा काफी अनुसंधान के बाद मंदिर में विद्यमान प्रतिमा को सातवीं शताब्दी में बनाया गया बताया जाता है। इस मंदिर के प्रांगण में प्राचीन गुफाएं स्थित है। मंदिर से कुछ पहले ही प्रवेश द्वार पर एक बड़ी पाषाण शिला रखी है। प्राचीन मान्यता के अनुसार साल में एक बार पितृमोक्ष अमावस्या माह के प्रथम बुधवार को श्रद्धालुओं के दर्शन हेतु पाषाण कपाट खोला जाता है। सूर्योदय के साथ ही दर्शन प्रारंभ होकर सूर्यास्त तक मां की प्रतिमा का दर्शन कर श्रद्धालु गण हर्ष विभोर होते है। आसपास के पूरे क्षेत्र में इस मंदिर की बहुत मान्यता है। स्थानीय लोगों का विश्वास है कि मंदिर में मांगी उनकी हर मनोकामना पूरी होती है। वहीं छत्तीसगढ़ के बाहर लोग इस मंदिर के बारे में ज्यादा नहीं जानते। इस मंदिर में चढ़ाया जाने वाला प्रसाद भी काफी अनोखा है अर्थात **इच्छा पूरी करने के लिए खीरा चढ़ाया जाता है।**

ऐसा माना जाता है कि इस मंदिर में अगर आप खीरा चढ़ाते हैं तो इससे आपकी मुराद पूरी होगी। यही वजह है कि इस मंदिर के बाहर आपको खीरे की कई सारी 'गुमटीनुमा' दुकानें देखने को मिलती हैं, जो साल में एक दिन के लिए ही लगाई जाती हैं। लोग न सिर्फ खीरा चढ़ाते हैं बल्कि प्रसाद के रूप में भी दिए गए खीरे को अपने घर भी ले जाते हैं। माना जाता है कि यहां खीरा चढाने से संतान का सुख प्राप्त होता है। जब इस मंदिर के कपाट खोले जाते हैं, तो कई दिन पहले से लोगों को इस बारे में बता दिया जाता है। साथ ही यहां पुलिस प्रशासन की देख-रेख में ही दर्शन किए जाते हैं।

वर्ष में केवल बारह घंटे के लिए खुलने का कारण :

छत्तीसगढ़ के जिस क्षेत्र में यह मंदिर बना हुआ है, वो एक गहन नक्सली इलाका है। यही कारण है कि सख्त सुरक्षा होने की वजह से लोगों का इस मंदिर के आसपास आना मना है और लोग भी इस तरफ नहीं जाते हैं।

शैल चित्र: केशकाल तथा आसपास का क्षेत्र पुरातात्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। केशकाल की घाटी के आसपास का छेरा - बेड़ा तक फैले क्षेत्र में पर्याप्त खनिज सम्पदा के साथ ही लिंगदरहा, लोऊ हाता, लयाह मटटा, मुत्ते खड़का, सिंगार-हुर में शैल चित्र पाए गए हैं। जो व्यापक शोध का विषय हो सकते हैं। इनका पाया जाना कोण्डा गांव जिले को एक विलक्षण पहचान देता है।

टाटामारी : केशकाल घाटी के अंतिम ऊपरी बारह भंवर पठार पर, धन-धान्य की अधिष्ठात्री आदि शक्ति - स्वरूपा माता महालक्ष्मी शक्ति पीठ, टाटामारी सुरडोंगर केशकाल में आदिमकाल से पौराणिक मान्यताओं पर अखण्ड ऋषि के तपोवन पर स्थापित है। यहां पिछले अनेक वर्षो से श्रद्धालुजन दीपावली लक्ष्मी पूजन के दिन विधि-विधान से पूजा अर्चना सम्पन्न करते आ रहें है। सुरडोंगर तालाब, भंगाराम माई मंदिर होते टाटामारी ऊपरी पहाड़ी पठार पर महालक्ष्मी शक्ति पीठ स्थल तक भक्तगण (महिलाएं, पुरूष, बुजूर्ग) बड़ी श्रद्धा से पहुंचते हैं। प्राकृतिक सौंदर्य से आच्छादित अनुपम स्थल और उसकी मनोरम छटा के भी दर्शन करते हैं। ऐतिहासिक धरोहर स्थल टाटामारी पठार के करीब डेढ सौ एकड़ जमीन पर नैसर्गिक रूप से मनोहरी ऊंची चोटियों का विहंगम दृश्य देखते बनता है।

टाटामारी में विकसित पार्क

गढ़ धनोरा : कोण्डागांव से केशकाल मुख्य मार्ग पर केशकाल से लगभग तीन कि.मी. की दूरी पर पूर्व की ओर स्थित गढ़ धनोरा ऐतिहासिक तथा धार्मिक महत्व का स्थल है। धनोरा को कर्ण की राजधानी कहा जाता है। यहां के टीलों की खुदाई करने पर गढ़ धनोरा में 5-6वीं सदी के प्राचीन मंदिर, विष्णु की मूर्ति के साथ ही कुछ अन्य मूर्तियां और बावड़ी मिली है। टीलों की खुदाई मेंकुछ छोटे बड़े कई शिव मंदिर भी मिले हैं।

यहां गोबरहीन के नाम से प्रसिद्ध एक टीले पर कई शिवलिंग स्थित है। इस स्थान पर महाशिवरात्रि के अवसर पर विशाल मेला भरता है। इसी तरह केशकाल की पवित्र पुरातात्विक भूमि में अनेक स्थल ऐसे हैं जो न केवल प्राचीन इतिहास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है बल्कि श्रद्धा एवं आस्था के अदभुत केंद्र हैं। जिनमें नारना में अदभुत शिवलिंग तथा पिपरा के जोड़ा शिवलिंग की बड़ी मान्यता है। केशकाल गढ़ धनौरा किले से लगे गोबरहीन में भी प्राचीन भगनावशेष भी दिखाई देते हैं, जिससे लगता है कि वास्तव में ही यह कभी किसी राजा की राजधानी रही होगी।

कटुल कासा जलप्रपात, होनहेड़ : केशकाल शहर से लगभग 14 कि.मी.की दूरी पर स्थित और गोबरहीन मंदिर गढ धनोरा के रास्ते पर ग्राम होनहेड़ से करीब **ए**क कि.मी.की दूरी पर घने जंगलों के बीच कटुल कासा बारहमासी झरना है। इसकी ऊंचाई 80 फीट के करीब है। बारिश के दिनों में इसकी खूबसूरती और ज्यादा बढ़ जाती है।

यह अभी कुछ समय पहले तक अनदेखा और लोगों की नजरों से छिपा हुआ था। सरकार की ओर से पर्यटन की दृष्टि से एक मनोहरी स्थल के रूप में विकसित किया गया है। स्थल तक पर्यटकों के लिए आवागमन की सुविधा के साथ ही जलप्रपात से थोड़ी दूरी पर खानपान सेवाएं तथा अन्य मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराई हैं।

नीम दहरा जलप्रपात :

नीम दहरा जलप्रपात केशकाल से बहीगांव के मध्य बटराली से पश्चिम दिशा कुछ दूर आने पर दक्षिण दिशा में एक कच्चा मार्ग है फिर कुछ दूर पर एक घाटी है उसके लगभग 500 मीटर की दूरी पर यह नीम दहरा जलप्रपात स्थित है। इस जलप्रपात की ऊंचाई लगभग 25 फीट और

चौड़ाई लगभग 35 फीट है। वैसे तो इस मार्ग में 7-10 छोटे जलप्रपात है। जिनका जिक्र फिर कभी आगे करेंगे परंतु इस मार्ग में पहला जलप्रपात, नीमदहरा जलप्रपात ही है। यह पिकनिक का बढ़िया स्पॉट है। कभी घूमने के लिए केशकाल आएं तो परिवार के साथ नीमदहरा पर एक बार पिकनिक मनाने जरूर आना चाहिए। अब शासन की ओर पर्यटकों की सुविधा हेतु अच्छी व्यवस्था की गई है।

मांझीन गढ़ : जिले के एक विशेष प्रचलित होते मांझीन गढ़, ईको पर्यटन स्थल के रूप में लोगों को लुभा रहा है। यहां के घने जंगल, वन्य जीव, औषधीय पौधे, प्रागैतिहासिक चित्रकला, सुंदर मनमोहक वादियां तथा भौगोलिक संरचनाएं पर्यटकों को एक विशेष अनुभव प्रदान करती हैं। यहां प्रशासन की ओर से साहसिक खेलों के साथ सीमित संख्या में आवास सुविधाएं भी उपलब्ध कराई गई हैं।

मांझीन गढ़ में रॉक क्लाईबिंग

केशकाल के बारे में कुछ दस्तावेजों से :

केशकाल का क्षेत्र सन् 1890 तक जंगल झाड़ी से भरा हुआ था और यहां कोई आबादी नहीं थी। पहाड़ों और घने जंगल की वजह से आगे जाने का रास्ता पूर्णतः अवरूद्ध था। बस्तर के राजा श्री भोरम देव ने इस पहाड़ को तुड़वा कर उसके बीच से रास्ता निकालने का निश्चय किया ताकि बस्तर राज्य का संपर्क बाहरी दुनिया से हो सके। महाराजा भोरम देव ने पहाड़ को तोड़कर रास्ता निकालने का ठेका (कार्य) सन् 1879 में उत्तर प्रदेश निवासी श्री पुत्तन राम सिंह ठेकेदार को सौंप दिया। श्री पुत्तन राम सिंह घाटी का कार्य शुरू करने के पूर्व कांकेर राज्य के पुराने पुल (तेलगरा का पुराना पुल) निर्माण का कार्य सफलता पूर्वक पूरा कर चुके थे।

पहाड़ तोड़ कर रास्ता निकालने का कार्य सन् 1890 में पूर्ण हुआ। पहाड़ से रास्ता निकल जाने से इस क्षेत्र एवं बस्तर राज्य का संपर्क बाहरी दुनिया से होने लगा। इससे बस्तर राज्य के

व्यवसाय एवं विकास की संभावना निश्चित हुई। लेकिन उस समय जगदलपुर से पहाड़ तक का यह मार्ग सिर्फ एक कच्ची सड़क के रूप में था। पहाड़ को काट कर रास्ता निकाले जाने के पश्चात् महाराजा भोरम देव ने आवागमन की सुविधा को ध्यान में रख कर पक्की सड़क के निर्माण पर ध्यान दिया, जो अति आवश्यक था। महाराजा ने श्री पुत्तन राम सिंह ठेकेदार को पुनः सड़क निर्माण हेतु प्रेरित कर, उन्हें ही पक्की सड़क का निर्माण करने का कार्य सौंप दिया। बस्तर राज्य की सीमा उत्तर में (मुखेंड गांव से 9 कि.मी. आगे) कांकेर राज्य की सीमा से मिलती थी, वहीं से ही सड़क निर्माण का कार्य प्रारंभ किया गया।

तेलिन घाटी (वर्तमान में भी इसी नाम से प्रसिद्ध) के निर्माण में लगभग 10-11 वर्ष लगे थे। इस अवधि में ठेकेदार श्री पुत्तन राम सिंह और दूसरे मजदूर अपने परिवारों के साथ, निकट ही अस्थायी तंबुओं, झोपड़ियों में रह रहे थे। जब महराजा ने श्री पुत्तन राम सिंह को जगदलपुर बुलाकर, सड़क का नया कार्य दिया तब उन्होंने महाराजा भोरम देव से निवेदन किया कि उन्हें कुछ मकान आदि बनाने के लिये भूमि दिलाई जाये ताकि वे व्यवस्थित हो कर रह सकें। परिवार भी बड़ा हो गया था। माता-पिता और दो पुत्र एवं एक पुत्री सहित परिवार में सात सदस्य थे।
महराजा ने श्री पुत्तन राम सिंह से पूछा कि कहां जमीन चाहते हो? इस पर उसने घाट के ऊपर ही आसपास कहीं पर भी थोड़ी सी जमीन देने की प्रार्थना की। दो माह पश्चात बस्तर राज्य की सील मुहर के साथ एक राजकर्मचारी उनको पट्टा दे गया, जिसमें आज के केशकाल ग्राम की पूरी भूमि पुत्तन राम सिंह के नाम कर दी थी।
इतने बड़े क्षेत्र का पट्टा मिलने पर पुत्तन राम को आश्चर्य हुआ क्योंकि उन्होंने तो इतनी भूमि की मांग नहीं की थी और उन्हें इतनी भूमि की आशा भी नहीं थी। कुल भूमि लगभग छः सौ एकड़ के आसपास थी। उन्हें आशंका हुई कि पट्टा देने में शायद किसी प्रकार की भूल हो गई है। अतः वह शंका के समाधान के लिए, महाराजा साहब से मिलने बैलगाड़ी से जगदूगुड़ा (जगदलपुर का नाम पहले जगदूगुड़ा था) पहुंचे और राजा साहब से मिलकर उन्होंने अपनी शंका व्यक्त की। इस पर राजा भोरम देव ने कहा कि शंका की कोई बात नहीं हैं। हमने अपनी इच्छा से ही तुम्हें यह भूमि दी है, तुम इसका विकास करो, अपने साथ अपने कारिंदो (काम करने वाले) को भी बसाओ। दरअसल महराजा घाट से रास्ता निकलने पर खुश थे।
श्री पुत्तन राम सिंह जगदलपुर से वापस आ गए। उन्होंने स्थान का चयन कर एक अच्छा सा मकान बनाने का निश्चय किया। वह मकान आज भी केशकाल ग्राम के बीचों-बीच अच्छी हालत में स्थित है। तब तक केशकाल ग्राम का कोई नामकरण नहीं हुआ था। चूंकि संपूर्ण क्षेत्र (वर्तमान केशकाल) जंगल झाड़ी से भरा हुआ था और राजा साहब के आदेशानुसार क्षेत्र के विकास का कार्य एक जटिल समस्या थी।

श्री पुत्तन सिंह ने अपने मुनीम, मुंशी तथा कामगार लोगों को इसी क्षेत्र में बसने के लिये राजी किया और अंत में वह सभी लोग उनके साथ ही रहने लगे और खेतों के लिए बिना कोई पैसा लिए भूमि भी मिल गई। इस तरह पुत्तन ठेकेदार ने अपने खाते से, प्रत्येक बसने वाले को एक से पांच एकड़ भूमि खेत और घरबार के लिये दे दी। कुछ लोग इस तरह अपना मकान एवं खेती बनाने में लग गए। सबसे पहले लाला जगरूप प्रसाद श्रीवास्तव ने (जो ठेकेदार पुत्तन सिंह के साथ उत्तर प्रदेश से आए थे और उनके मुख्य मुनीम थे) अपना मकान बनाया और खेती सुधार का कार्य शुरू किया। श्रीवास्तव जी पुत्तन सिंह की भूमि का कार्य भी देखते थे। मुख्य रूप से जमीन सुधार का कार्य श्री मुंशी बलियार सिंह देखते थे। श्री श्रीवास्तव एवं श्री बलियार सिंह के वंशज आज भी केशकाल में रहते हैं। इस तरह अन्य कामगारों ने भी अपनी अपनी भूमि पर किसानी शुरू कर दी। गांव बसने लगा और खेती भी की जाने लगी। उन्हें यथोचित सहायता भी प्रदान की गई। गांव बसाने में सबसे अधिक सहयोग छत्तीसगढ़ के कामगारों एवं आदिवासी मजदूरों से मिला। आज भी केशकाल में मुख्य मोहल्ले उन्हीं लोगों के हैं।

सन् 1896 में महाराजा भोरमदेव की मृत्यु हो गई। बस्तर राज्य की गद्दी पर उनके पुत्र श्री रूद्रप्रतापदेव बैठे। जब लोग यहां घर बना कर बसने लगे, तब गांव का क्षेत्र निर्धारित करने का प्रश्न आया। श्री पुत्तन राम सिंह ने 'तहसीलदार बड़े डोंगर' को गांव की सीमा निर्धारित करने के लिये निवेदन किया। सन् 1905 में श्री बैजनाथ पंडा बस्तर के दीवान थे, तब तक वर्तमान केशकाल विकसित हो चुका था। इस रिपोर्ट के आधार पर ग्राम का नामकरण करना आवश्यक था। अतः श्री बस्तर राज्य के दीवान बैजनाथ पंडा ने यहां आकर एक जलसे का आयोजन कर इस नए गांव का नाम 'केशकाल' घोषित किया।

केशकाल नाम ही क्यों रखा गया, कारण ?

पुत्तन राम सिंह की पत्नी का जन्म का नाम केशादेवी था। वह बहुत ही सरल एवं उदार प्रवृत्ति की महिला थीं और जरूरतमंदो की सहायता करती थीं। यहां आने के बाद, उनके उदार स्वभाव और ठेकेदार की पत्नी होने के कारण लोग उन्हें 'महरजिया' ही कहने लगे थे। श्री बैजनाथ पंडा ने केशा देवी (तेरह भांवरों की लहराती हुई 'काल स्वरूप घाटी' के दृश्य) के मिलान से इस क्षेत्र का नामकरण 'केशकाल' कर दिया ।

चूंकि घाटी का कार्य शुरू होने पर अनेक परिवार मजदूर के रूप में आए थे और घाट (केशकाल या तेलन घाटी) और सड़क का काम काफी लंबा चला अतः कामगर डीही (झोपड़े) बना कर रहने लगे थे। आज केशकाल के पहाड़ से हटकर, एक ऊंची जगह पर कोसरू राम, जो अंत तक पुत्तन राम परिवार का विश्वसनीय रहा था, एवं उनके परिवार के सदस्यों ने पांच झोपड़े बनाकर रहना शुरू कर दिया था। थोड़ी बाड़ी-बखरी भी बना ली थी। वही 'डिही' आज का आदिवासी मोहल्ला है, जिसे मुरिया पारा या 'कोसरू डिही' भी कहा जाता था। वर्तमान केशकाल तहसील का क्षेत्र

1924 ई. के पूर्व बड़े डोंगर की तहसील को मिला कर कोंडागांव तहसील बनाई गई और इसे ग्रामीण क्षेत्र घोषित किया गया।

केशकाल घाट और तेलिन घाटी के बारे में :

जब केशकाल घाटी का रास्ता खुला और आवागमन शुरू हुआ तब बैलगाड़ियों का जमाना था। पैदल या घोड़ों पर लोग सफ़र करते थे। केशकाल घाटी एक भयावह घाटी थी (और आंशिक रूप से आज भी है)। पुराने समय में दिन में भी शेर चीते सड़क पर मिल जाते थे। इस घाटी को पार करते समय लोगों में सदैव भय बना रहता था। ऐसे समय में मनुष्य स्वभाव में एक बात सदैव आती है और वह यह कि 'ईश्वर' उसकी रक्षा करें।

बस्तर जैसे आदिवासी क्षेत्र में ईश्वर की जगह देवी-देवताओं की मान्यता है और भावना एक ही है (परम शक्तिवान)। अतः मुसाफिरों ने, खासकर गाड़ीवानों ने, घाटी की भयानकता को देखते हुए जिनका सफ़र अधिक कष्टदायक था। एक देव पत्थर की स्थापना कर उस पर तेल चढ़ाने लगे थे। भावना यह थी कि उनकी यात्रा सुगम हो। गाड़ीवान जो तेल देव पत्थर पर चढ़ाते थे, वह बैलगाड़ियों के चक्कों (पहियों) में डालने वाला तेल होता था, जिसे 'ओंगन तेल' कहा जाता है।

तेलिन सती माता के प्रकटन की कथा :

एक जनश्रुति है कि एक गाड़ीवान, उसके बैलों के कमजोर होने के कारण, अपने साथियों से पिछड़ गया। आधी घाटी के बीच ही रात होने लगी थी जबकि दूसरे गाडीवान निकल गए थे। मढ़ी (देवस्थान) पर पहुंच कर उसने गाड़ी खोल दी और वह आग जलाने की व्यवस्था करने लगा कि उसे शेर की गर्जना सुनाई दी। उसने देवी माता को याद किया और अपने ढोंढे का (बांस से बना, बोतल जैसा पात्र) सारा तेल देवी पर चढ़ा दिया। उसने फिर शेर की दूसरी आवाज सुनी। उसने देवी से मन्नत मांगी कि अगर जीवित रहा तो परिवार के साथ आकर देवी माता के दर्शन करेगा।

शेर की तीसरी आवाज पर वह भय के कारण देव पत्थर के सामने ही मूर्छित हो गया। मूर्छावस्था में उसे एक देवी के दर्शन हुए जो उसकी रक्षा में खड़ी थीं।

जब उसकी मूर्छा हटी तब सुबह होने को थी। उसका सर तेल से भींगा हुआ था। उसके बैल भी सही सलामत खड़े थे। उसने देव पत्थर को देवी के रूप में स्वीकार किया। अपने गांव जाकर यह घटना अपने परिवार एवं गांव वालों को बताई। उसने अपने परिवार एवं रिश्तेदारों के साथ पुनः आकर देवी माता की पूजा-अर्चना की और उसने देवी माता को तेलिन सती मां की मान्यता दी। तब से केशकाल घाटी का नाम 'तेलिन घाटी' के नाम से मशहूर हुआ। आज भी इस क्षेत्र में तेलिन माता की बड़ी मान्यता है।

केशकाल पहुंचने से पहले 12 भंवर को चढना पडता है तथा चौथे मोड़ में एक मंदिर दिखाई पड़ता है। जिसे तेलिन सती मंदिर के नाम से जाना जाता है। तेलीन सती मंदिर आने जाने वाले यात्रियों के लिए एक आस्था का केन्द्र है। यहां आने जानें वाले सभी वाहन कुछ समय के लिए जरूर रुकते हैं और मंदिर का प्रसाद जरूर लेते हैं।

इसी बारह भंवर के अंन्तिम उंचाई में सीता पंचवटी था जिसे पुलिस वालो ने अपने कब्जें में ले लिया है और किसी को वहां जानें की अनुमति नहीं दी जाती है। केशकाल घाट को पार करने पर ऊपर में बसा केशकाल है। जहां कहा जाता है कि मुस्लिम भाईयों की जनसंख्या अधिक है।

केशकाल घाट के आसपास ही भंगाराम का निवास स्थल है, जो सभी देवता को दण्ड व कुछ समय के लिए उनकों उनकी शक्ति से वंचित भी करते हैं। इनका मेला साल में एकबार लगता है। कहा जाता है कि इसमें देवताओं के किए गए कार्यों का परीक्षण किया जाता है तथा उनकों उनकें द्वारा किये गयें गलत कार्यो के लिए दण्ड भी दिया जाता है।

कैसे पहुंचा जाए :

वायु मार्ग : कोंडागांव आने के लिए निकटतम जगदलपुर हवाई अड्डा है जो यहां से लगभग 80 कि.मी.दूर है। स्वामी विवेकानंद हवाई अड्डा रायपुर से भी आ सकते हैं, जो यहां से लगभग 220 कि.मी. की दूरी पर है। दोनों ही स्थानों से पूर्व बुकिंग पर टैक्सियां, अन्यथा सरकारी बसों से पहूंच सकते हैं।

रेल मार्ग : कोंडागांव के निकटतम रेलवे स्टेशनों में बस्तर टोकापाल 67 कि.मी. और दूसरा जगदलपुर लगभग 70 कि.मी.की दूरी पर हैं।

सड़क मार्ग : नियमित रूप से उपलब्ध CSRTC की बस सेवाओं के कारण छत्तीसगढ़ राज्य के किसी भी हिस्से से कोंडागांव आसानी से पहुंचा जा सकता है। कोंडागांव कांकेर, जगदलपुर और रायपुर जैसे प्रमुख शहरों से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है।

कहां ठहरें :

केशकाल में वन विभाग के पंचवटी विश्राम गृह को छोड़कर केवल बजटीय आवासीय सुविधाएं हैं। लेकिन केशकाल से लगभग 28 कि.मी.की दूरी पर कांकेर में अच्छे होटल मिल जाते हैं। वैसे भी विदेशी पर्यटक कांकेर में ही रुकते हैं और वहां से उन्हें एक दिन के भ्रमण पर केशकाल लाया जाता है।

- सम्प्रति : बस्तर पर अब तक 14 किताबें प्रकाशित एवं बस्तर पर सर्वाधिक पुस्तकें लिखने वाली छत्तीसगढ़ की एकमात्र महिला लेखिका। छत्तीसगढ़ तथा उतराखंड राज्यों से साहित्य सम्मान तथा राज्यपाल द्वारा राज्य शिक्षक विशेष स्मृति सम्मान पुरस्कार से सम्मानित। देश के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशन। अतुल्य भारत में प्रथम योगदान। व्याख्याता अंग्रेजी के पद पर पदस्थ।

  सम्पर्क - मोबाईल - 9301836811

नेल्लूरू

*राज कुमार

नेल्लोर या नेल्लूरू अधिकतर भारतीयों के लिए एक अंजान सा शहर है। मैंने भी कभी नहीं सोचा था कि कभी इस स्थान पर जाने का अवसर मिलेगा। वहां कार्यरत रहे दो अधिकरियों से बातचीत होती तो आवागमन की असुविधा पर ही बात समाप्त हो जाती। आखिर एक बार वहां जाने को मौका मिला तो उनकी बातें बेमानी लगी। पेन्ना नदी के तट पर स्थित और आंध्र प्रदेश में सबसे अधिक आबादी के लिहाज से नेल्लूरू चौथा नगर है। इस खूबसूरत शहर की मेरी यात्रा पाठकों की जानकारी के लिए प्रस्तुत है।

नेल्लूरु के बारे में .....

स्थल पुराण की एक पौराणिक कथा में बताया गया है कि 'नेली' के पेड़ के नीचे एक पत्थर के रूप में एक शिवलिंग पाए जाने के कारण धीरे - धीरे यह स्थान 'नेली-ओउरू' कहलाने लगा। कुछ विद्वानों का मानना है कि इसका नाम "नेल्लूरु", तमिल शब्दों के "नेल" और "ओरु" के संयोजन से पड़ा, जिनमें 'नेल' का अर्थ धान और 'ऊरु' का अर्थ स्थान अथवा शहर होता है। यह पोट्टी श्रीरामुलु जिले का प्रशासनिक मुख्यालय है। भले ही इसकी आबादी का एक बड़ा हिस्सा ग्रामीण है और कृषि पर निर्भर है, लेकिन यहां शैक्षणिक संस्थानों, कारखानों और व्यवसायों की संख्या में वृद्धि हुई है, जिससे शहर को एक नया रूप मिला है।

नेल्लूरू को भारत की मत्स्यपालन की राजधानी भी कहा जाता है क्योंकि यहां मछली और झींगा का एक बड़ा उद्योग है। पूर्व की ओर समुद्र और उपजाऊ भूमि के कारण कृषि और जलीय कृषि समृद्ध हुई है। यहां झींगा मछली का सबसे अधिक उत्पादन होता है।

नेल्लूरू आने वाले पर्यटक यहां की प्रसिद्ध मछली से बने एक खास व्यंजन (डिश) का स्वाद जरूर लेते हैं, जिसे 'नेल्लूरू चेपालापलुसु' (मछली करी) के नाम से जाना जाता है।

नेल्लूरू में मंदिर, किले और स्मारक, नेलापट्टु पक्षी अभ्यारण्य और पुलिकट झील यहां के प्रमुख आकर्षण हैं। इस शहर में प्राचीन काल के अनेक महत्वपूर्ण मंदिर भी है, जहां प्रति वर्ष बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की भीड़ होती है। पर्यटन के क्षेत्र में यहां विकास की बहुत संभावनाएं हैं।

एक दृष्टि : नेल्लूरु के इतिहास पर...

प्राचीन काल में विक्रमसिम्हापुरी के नाम से प्रख्यात, यह क्षेत्र तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में मौर्य वंश के अशोक साम्राज्य का हिस्सा था। उसके बाद, इस क्षेत्र को पल्लव राजवंश के शासकों ने जीत लिया था और चौथी से छठीं शताब्दी तक पल्लवों के अधीन रहने के बाद इस क्षेत्र पर चोल शासकों ने लंबे समय तक शासन किया। तमिल शिलालेखों से संकेत मिलता है कि 13वीं शताब्दी ईस्वी में चोल शासकों के पतन के पश्चात, विक्रमसिम्हापुरी पर पल्लव,पाण्ड्यन, कलिंग साम्राज्य खारवेल के चेदिवंश, सातवाहन, काकतीय, विजयनगर साम्राज्य और अन्य राजवंशों ने शासन किया और किसी न किसी रूप में इसे अपने अधीन रखा था। उनके बाद, यह गोलकुंडा की सल्तनत, मुगल साम्राज्य और आर्कोट नवाबों के शासन में रहा था। 18वीं शताब्दी में, इसे अंग्रेजों ने आर्कोट के नवाबों से छीन कर अपने कब्जे में ले लिया था और इसे ब्रिटिश भारत के मद्रास प्रेसीडेंसी का हिस्सा बना दिया था। 1947 तक यह अंग्रेजों के शासन में रहा था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यह क्षेत्र मद्रास राज्य का हिस्सा था।

पोट्टी श्रीरामुलु को आंध्र अस्मिता के लिए आत्म-बलिदान देने के कारण आंध्र प्रदेश के संस्थापक पिता के रूप में जाना जाता है, जो एक स्वतंत्रता सेनानी और क्रांतिकारी थे। श्रीरामुलु आंध्र क्षेत्र को अलग प्रदेश बनाने की मांग को लेकर 56 दिनों तक मद्रास (आज का चेन्नई) में आमरण अनशन करने से वह प्रसिद्ध हुए और इसी अनशन में उनकी मृत्यु हो गई। श्रीरामुलु 19 अक्तूबर, 1952 से आमरण अनशन पर बैठे थे। अनशन के 56वें दिन रामुलु कोमा में चले गए और दो दिन कोमा की स्थिति के बाद 58वें दिन यानि 15 दिसंबर,1952 को उन्होंने दम तोड़ दिया था। श्रीरामुलु की मृत्यु के चार दिन बाद भारत सरकार ने मद्रास से अलग आंध्र प्रदेश बनाने की घोषणा कर दी थी। पहली बार 01 अक्टूबर 1953 को आंध्र स्टेट के नाम से गठन हुआ और दूसरी बार 01 नवंबर,1956 को फिर से गठन किया गया, जिसमें इसका नाम आंध्र प्रदेश और हैदराबाद को राजधानी बनाया गया।

तेलुगु भाषा के उदय और आंध्र प्रदेश राज्य के गठन में इस शहर की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आंध्र प्रदेश के गठन के लिए मृत्यु तक उपवास रखने वाले पोट्टी श्रीरामुलु नेल्लूरू के ही रहने वाले थे। 4 जून, 2008 को नेल्लोर जिले का नाम बदलकर श्री पोट्टी श्रीरामुलु नेल्लूरू जिला कर दिया गया और साथ ही तेलुगु के अनुसार नेल्लोर को 'नेल्लूरू' नाम दिया गया।

भाषा : इस क्षेत्र में अधिकतर लोग तेलुगु भाषा ही बोलते हैं। लेकिन अंग्रेजी भी ठीक ठाक से समझ लेते हैं। इसके अलावा,यहां अधिकतर होटलों तथा अन्य निजी कार्यालयों में ओडिशा के लोगों की अच्छी संख्या होने से, उड़िया भाषा से भी काम चल जाता है। लेकिन यहां स्थानीय रूप से किसी से हिंदी बोलने की उम्मीद ना करें, तो अच्छा है।

सांस्कृतिक दृष्टि से नेल्लूरु आंध्र प्रदेश के अन्य शहरों से अलग माना जाता है क्योंकि यहीं पर महान तेलुगु कवि तिक्कना सोमयाजी का जन्म हुआ था जिन्होंने आगे चलकर महाभारत का तेलुगु भाषा में (टीका सहित) अनुवाद किया था। तिक्कना सोमयाजी (1205-1288) 13वीं सदी के तेलुगू कवि थे।

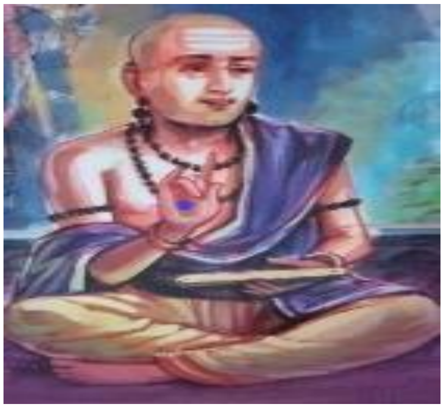

वह काकतीय वंश के स्वर्ण युग के दौरान एक तेलुगु भाषी नियोगी ब्राह्मण परिवार में जन्मे तथा "कवि त्रयम" के दूसरे कवि थे, जिन्होंने महाभारत का तेलुगु में अनुवाद किया था। प्रथम, नन्नया भट्टारक ने महाभारत के ढाई अध्यायों का अनुवाद किया। टिक्काना ने अंतिम 15 अध्यायों का, टीका सहित, अनुवाद किया था। सोमयाग को पूरा करने के कारण तिक्कना सोमयाजी भी कहा जाता है।

मिपाडू तट :

अब पर्यटन स्थलों में सबसे पहले हम जिक्र करते हैं, मिपाडु तट का, जिसे हरित तट भी कहा जाता है। नेल्लूरू से 20 कि.मी. दूर बंगाल की खाड़ी के पश्चिमी तट पर मिपाडू तट है। आजकल इस समुद्र तट का रखरखाव आंध्र प्रदेश पर्यटन विकास निगम द्वारा किया जा रहा है।

निगम ने यहां पर्यटकों के घूमने के लिए अच्छी सुविधाओं के साथ ही समुद्र में स्थानीय मछुआरों के साथ मछली पकड़ने की सुविधाएं भी उपलब्ध कराई हैं। पर्यटन विकास निगम ने पानी के खेलों जैसे मनोरंजक कार्यकलापों का विकास किया है। साथ ही मिपाडु समुद्र तट को और अधिक आकर्षक पर्यटन स्थल बनाने के प्रयास में तट पर ठहरने के लिए रिसॉर्ट्स बनाए गए हैं, जिनमें पर्यटक अच्छी सुविधाओं के साथ दो तीन दिन रूक सकते हैं।

इस तट के कुछ भाग को हरित तट का नाम दिया गया है। तट से लगे करीब दो एकड़ के क्षेत्र में हरित आश्रम नाम से परिसर एक बड़ा मंदिर है, जिसमें एक बड़े आकार के शिवलिंग सहित आंध्र प्रदेश के नामी मूर्तिकारों द्वारा बनाई गईं विभिन्न देवी देवताओं की सुन्दर प्रतिमाओं को देखा जा सकता है।

हरित तट पर बना मंदिर

पुलिकट झील :

पक्षी देखने वालों का स्वर्ग, पुलिकट झील को भारत में खारे पानी की दूसरी सबसे बड़ी झील माना जाता है। यह बंगाल की खाड़ी से सटे आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु, दो राज्यों में फैली हुई है। इस झील में पक्षियों को प्रजनन और भोजन के लिए उपयुक्त वातावरण उपलब्ध कराया गया है इसलिए यह बड़ी संख्या में प्रवासी जलीय पक्षियों को अपनी ओर आकर्षित करती है। इसका क्षेत्र आंध्र प्रदेश में छह सौ वर्ग कि.मी. से अधिक तक फैला हुआ है, जिसमें नेल्लूरू जिले के पांच मंडल शामिल हैं। जल पक्षी और अन्य पक्षी जैसे फ्लेमिंगो, पेंटेड स्टॉर्क, एग्रेट्स, ग्रे पेलिकन, ग्रे बगुले, पिंटेल, ब्लैक विंग्ड स्टिल्ट्स, शॉवेलर्स आदि, इस झील की यात्रा करते हैं। ये प्रवासी पक्षी सर्दियों के दौरान आते हैं क्योंकि झील इन्हें भोजन और शिकारियों से सुरक्षा प्रदान करती है। झील को 1976 में वन्य जीवन (संरक्षण) अधिनियम पक्षी के तहत, अभयारण्य के रूप में अधिसूचित किया गया था।

पुलिकट झील में पिछले कई सालों से फ्लेमिंगो फेस्टिवल का आयोजन किया जा रहा है। दुनिया के विभिन्न हिस्सों से प्रवासी पक्षी सर्दियों के मौसम में प्रजनन के लिए यहां आते हैं। यह महोत्सव प्रवासी पक्षियों, विशेष रूप से राजहंस, के आगमन का स्वागत करने और पंछी प्रेक्षण मनाने के लिए तीन दिवसीय उत्सव है। इस अवधि में पेलिकन, साइबेरियन स्टॉर्क, ओपन बिल स्टॉर्क, नाइट हेरॉन, एग्रेट्स, लिटिल कॉर्मोरेंट, गोल्डन बैकड वुड पेकर, स्पॉटेड एंड रिंग डव्स, किंग फिशर, पेंटेड स्टॉर्क, व्हाइट नेकेड स्टॉर्क, स्पून बिल पक्षियों की कुछ अन्य प्रजातियां यहां आती हैं। त्योहार के दौरान कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है और हजारों पर्यटक, परिदर्शक, प्रकृति प्रेमी इसमें भाग लेने और पंछी प्रेक्षण के लिए आते हैं।

नेल्लापट्टु अभ्यारण्य :

नेल्लापट्टु पक्षी अभ्यारण्य पुलिकट पक्षी अभ्यारण्य से 20 कि.मी. दूर नेल्लापट्टु गांव में स्थित है। 404 वर्ग कि.मी. में फैला यह अभ्यारण्य दक्षिण पूर्व एशिया में पेलिकन पक्षी का सबसे बड़ा प्राकृतिक निवास माना गया है। पूर्वी तट पर स्थित नेल्लपट्टु अभ्यारण्य में प्रवासी पक्षी भी बड़ी संख्या में आते हैं। यहां सिर्फ पक्षी ही नहीं पाए जाते बल्कि अन्य जीव जन्तु भी देखे जा सकते हैं।

बारह (12) शहीद दरगाह :

बारह शहीद दरगाह समुद्रतट से सिर्फ पांच कि.मी. दूर, सुल्लुरपेट में एक प्रसिद्ध समाधि है। इसे 12 शहीदों की स्मृति में बनवाया गया था। ऐसा माना जाता है कि यहां मन्नत मांगने पर सभी मुरादें पूरी होती है। इस दरगाह पर प्रति वर्ष बड़े स्तर पर मोहर्रम का उत्सव मनाया जाता है। मोहर्रम के दौरान, यहां तीन दिन का रोट्टेला पांडुगा आयोजित किया जाता है जिसमें यहां आने वाले श्रृद्धालुओं को रोटियां बांटी जाती हैं।

रोट्टेला पांडुगा :

रोटियों की ईद या रोट्टेला पांडुगा नेल्लूरू में बड़ा शहीद दरगाह में आयोजित एक वार्षिक तीन दिन का उत्सव है। मुहर्रम के महीने में वार्षिक आयोजन 12 शहीदों के उर्स के आयोजन के रूप में मनाया जाता है। इस दौरान, उर्स में दूर-दूर से लोग दरगाह के दर्शन करने आते हैं और यहां प्रचलित धार्मिक प्रथा के रूप में रोटियों का आदान-प्रदान करते हैं।

बारह शहीद दरगाह स्वर्णला चेरूवु के तट पर रोटियां बांटने की प्रथा कब से शुरू हुई, कब इसका पहला आयोजन हुआ इसके बारे में कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं है। फिर भी यह प्रति वर्ष सभी धर्मों के पर्यटकों को आकर्षित करता है। यहां आने वाले श्रृद्धालुओं को अमावस्या की रात में ठहर कर समुद्र का नजारा देखने की सलाह दी जाती है।

तलपागिरी रंगनाथस्वामी मंदिर :

श्री तलपागिरी रंगनाथ स्वामी मंदिर नेल्लूरू शहर में ही पेन्नार नदी के तट पर स्थित एक प्रसिद्ध मंदिर है। यह मंदिर 600 वर्ष से अधिक पुराना है। यह एक विशाल 29 मीटर लंबा गैलीगोपुरम द्वारा चिह्नित है, जिसमें सात स्वर्ण कलश इसकी स्थापत्य कला की भव्यता को प्रमाणित करते हैं।

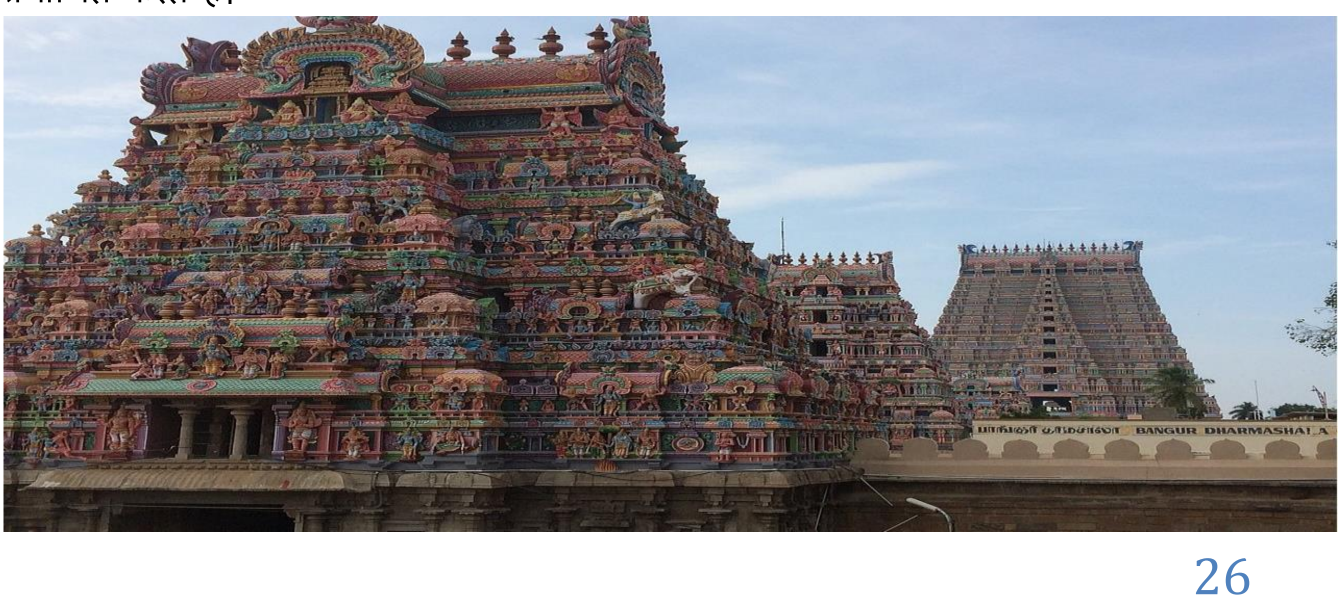

किवदंती है कि 7वीं शताब्दी में पल्लव शासक श्री राजराजा नरेंद्र ने स्वयं एक माह तक तपस्या की थी। उसके बाद भगवान ने उन्हें स्वप्न में दर्शन दिए और खुद को रंगनाथ स्वामी के रूप में स्थापित करने का आदेश दिया। श्री जत्थ वर्मा ने 13वीं शताब्दी में रंगनाथ स्वामी मंदिर को कीमती पत्थर और स्वर्ण आभूषण भेंट किए थे। तेलुगु के आदि कवि श्री कवि ब्रह्म टिक्काना ने पेन्नार नदी के तट पर ही 'विराटपर्वम महाकाव्य' यानी आंध्र महाभारतम् सम्पूर्ण रूप में (आदि से अंत तक) लिखा था। पूर्व में सात मंजिला महागोपुरम, दक्षिण में श्री रंगनायकी लक्ष्मी देवी मंदिर और सुंदर दर्पण दीपम है, पश्चिम में पवित्र पेन्नार नदी और उत्तर में श्री अंडाल अम्मावरी मंदिर है।

"अद्दामंडपम" मंदिर का सबसे खूबसूरत कक्ष है, जिसमें शीशों को विशेष प्रकार के कोणों में लगाया गया है। कक्ष के बीच में भगवान का सिंहासन है। जब इस सिंहासन पर मूर्ति रखी जाती है तो उसके प्रतिबिंब चारों ओर दिखाई पड़ते हैं। यह अद्भुत दृश्य देखने हजारों श्रद्धालु यहां आते हैं।

"ब्रह्मोत्सवम" अर्थात रंगनाथस्वामी की वार्षिक रथ यात्रा नेल्लूरू में एक बहुप्रतीक्षित आयोजन अनुष्ठान है। प्रति वर्ष मार्च-अप्रैल के महीने में (जो हिंदू कैलेंडर के अनुसार बदलता रहता है) इस भव्य उत्सव का आयोजन होता है। इस उत्सव में बड़ी संख्या में भक्तगण और पर्यटक एकत्रित होते हैं।

जोन्नावाड़ा कामाक्षी मंदिर, पेंचलाकोन्ना :

नैल्लूर शहर से लगभग 15 कि.मी. दूर पेन्नार नदी के तट पर स्थित जोन्नावाड़ा कामाक्षी मंदिर एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान माना गया है। विश्व में कामाक्षी देवी के दो मंदिर हैं जिनमें से एक यहां है। 1150 ई0 में बनाए गए इस मंदिर परिसर में श्री मल्लिकार्जुन स्वामी और देवी कामाक्षी अम्मा का मंदिर है। देवी कामाक्षी को शक्ति का अवतार माना जाता है। उनके सम्मान में श्री जगद्गुरु शंकराचार्य द्वारा यहां एक 'श्री चक्रम' स्थापित किया गया था।

जोन्नावाड़ा के बारे में ....

मंदिर के बारे में यहां एक पौराणिक कथा बताई गई। ब्रह्म ऋषि श्री कश्यप महामुनि भूलोक (पृथ्वी) की यात्रा करने के उपरांत किसी पवित्र स्थान पर यज्ञ करना चाहते थे। तब उन्होंने कृष्णा नदी के उत्तर में निकट ही वेदाद्री पहाड़ी को यज्ञ वाटिका (यज्ञ करने के लिए जगह) के रूप में चुना और अपने शिष्यों के साथ श्री विष्णु जी की आराधना करने लगे, यज्ञ के समापन के बाद पूरे भूलोक में एक उज्ज्वल प्रकाश फैल गया और यज्ञ की अग्नि से भगवान मल्लिकार्जुन के रूप में प्रकट हुए थे। त्रेतायुग में महामुनि कश्यप ने इसी स्थान पर यज्ञ किया और भगवान मल्लिकार्जुन स्वामी को प्रसन्न किया था। इसलिए इस स्थान को 'यज्ञावटिका जोन्नावड़ा' के नाम से सम्बोधित किया गया।

इस स्थान पर मंदिर का निर्माण वर्ष 1150 के आसपास में किया गया था। मंदिर में प्रवेश करने से पहले तीर्थयात्री, इस मान्यता से कि एक पवित्र डुबकी उनके सभी बुरे कर्मों को धो देती है, मंदिर के पास कच्छप तीर्थम नामक झील में स्नान अवश्य करते हैं। यह गंतव्य हजारों तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता है। यहां प्रति वर्ष दस दिन का महोत्सव पूरी श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाता है। श्रृद्धालु भक्तगण अर्चना आराधना कर आशीर्वाद लेने के लिए, अपनी मनौतियां माता के सामने बोल बोलकर बताते हैं। श्री मल्लिकार्जुन स्वामी और कामाक्षीताई भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं।

यह एक अत्यंत प्राचीन तीर्थस्थल है। भगवान नरसिम्हा ने यहां खुद को 'योग मुद्रा' में एक विशाल चट्टान के रूप में प्रकट किया और इसलिए इसे 'पेनसिला' (विशाल चट्टान) का नाम मिला और समय के साथ 'पंचलकोना' के रूप में प्रसिद्ध हो गया। किंवदंती है कि हिरण्यकश्यप का वध करने के बाद, भगवान नरसिंह ने पंचालकोना में स्नान किया और नरसिंह के उस 'अवतार' को वापस ले लिया, जिससे उनका क्रोध और उग्रता दूर हो गई। यहां भगवान सोमशिला नरसिम्ह स्वामी के नाम से जाने जाते हैं और नव नरसिंह (नौ अभिव्यक्तियों) में से एक बन गए हैं। पुरातत्ववेत्ताओं का मानना है कि 10वीं शताब्दी में मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया था। साक्ष्यों से ज्ञात हुआ है कि कण्व ऋषि पूर्व में इस क्षेत्र में निवास करते थे, इसलिए यहां बहने वाली नदी को कण्व नदी नाम दिया गया और समय के साथ यह कंडलेरु बन गई।

श्री कृष्णा मंदिर :

इस्कॉन का विशाल मंदिर नैल्लूर के अन्नामाचार्य सर्कल कोंडायापलेम रोड पर स्थित है। मंदिर के गर्भगृह में भगवान श्री कृष्ण के साथ-साथ भगवान गणेश और दत्तात्रेय की प्रतिमाएं भी स्थापित की गई हैं। मंदिर परिसर में कार्यसिद्धि हनुमान और आस्था लक्ष्मी के मंदिर भी हैं। **श्रीराधा श्याम सुंदर मंदिर के नाम से भी जाना जाता है।**

नरसिम्हाकोंडा :

वेदगिरि लक्ष्मीनरसिम्हा स्वामी देवस्थानम लगभग 500 साल पहले नरसिम्हाकोंडा के शिखर पर अस्तित्व में आया था। शिलालेखों के अनुसार इस मंदिर का निर्माण नौवीं शताब्दी में पल्लव राजा नरसिंह वर्मा ने करवाया था। किंवदंती है कि ऋषि कश्यप ने पिनाकिनी नदी के तट पर मंदिर की स्थापना की थी। वैदिक शास्त्र ब्रह्मपुराण से पता चलता है कि नरसिंहकोंडा के शिखर पर सप्तऋषियों (सात ऋषियों) ने 'यज्ञ' किया था। पहाड़ी की चोटी पर मंडपों के साथ सात (कोनेरू) तालाबों का जीर्णोद्धार किया गया। यह पवित्र स्थान नेल्लूरू से 15 कि.मी. दूर,

पिनाकिनी नदी के दक्षिणी तट (और जोन्नावाड़ा नदी के उत्तर में) पर है। यहां प्रति वर्ष मई के महीने में बड़े स्तर पर 'ब्रह्मोत्सव' का आयोजन किया है।

वेंकटगिरी किला :

वेंकटगिरी किले का निर्माण वर्ष 1775 ई. में किया गया था। यह विजयनगर साम्राज्य के समय का राजमहल है। किले को मूल रूप से कालीमिली के नाम से जाना जाता था । प्राचीन किले के निर्माण की वास्तुकला और शिल्पकला आज भी देखने लायक है। किले में काशी विश्वनाथ मंदिर, रामलिंगेश्वर स्वामी मंदिर, प्रसन्ना वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर जैसे प्रसिद्ध मन्दिरों के अलावा भी अनेक मंदिर देखे जा सकते हैं, जो इस स्थान के विरासती महत्व को बढ़ाते हैं।
इस किले में सीमा से लगे जंगल और तरह-तरह के फूलों के बाग, यहां एक अलग ताजगी भरा माहौल बनाते हैं। नेल्लूरू के मुख्य शहर से लगभग 75 कि.मी. दूर वेंकटगिरी शहर हथकरघा सूती साड़ियों के लिए जाना जाता है। सुव्यवस्थित सड़क मार्ग होने से यहां की यात्रा सुरक्षित और आरामदायक है। यह स्थान केवल संस्कृति और इतिहास में उनकी रुचि रखने वाले पर्यटकों के बीच ही नहीं बल्कि ईको-पर्यटन स्थल के रूप में भी लोकप्रिय है। यही कारण है कि आज यह किला अब ट्रेकिंग (पैदल चढ़ाई) और कैंपिंग का एक प्रसिद्ध गंतव्य बन गया है।

सोमशिला :

नेल्लूरू से 80 कि.मी. की दूरी पर कृष्णा नदी के किनारे, सोमशिला अपने सोमेश्वर मंदिर प्रसिद्ध है। ऐसा माना जाता है कि सातवीं शताब्दी के दौरान श्री कृष्ण देवराय के शासनकाल में भगवान शिव को समर्पित करते हुए श्री ललित सोमेश्वर स्वामी का मंदिर का निर्माण किया गया था। प्रति बारह वर्षों में एक बार आयोजित किया जाने वाला ''सोमेश्वर स्वामी महोत्सव'' यहां का एक प्रमुख आकर्षण है। इसके अलावा, यहां महाशिवरात्रि और कार्तिक पूर्णिमा के धार्मिक उत्सवों के आयोजन बहुत उत्साह और जोश के साथ किए जाते हैं।

यहां 15 मंदिरों में, विभिन्न आकारों में शिवलिंग स्थापित किए गए हैं। सोमशिला मंदिर को कृष्णा नदी के जल में डूबने से बचाने के लिए प्राचीन गांव सोमशिला से एक ऊंचाई वाली भूमि पर ले जाया गया था। यहां की हरियाली और प्राकृतिक छटा के कारण कई पर्यटक इस जगह का उपयोग पिकनिक मनाने के लिए भी करते हैं। यह कर्नाटक और महाराष्ट्र के तीर्थयात्रियों के बीच लोकप्रिय है।

सोमशिला जलाशय :

सोमेश्वर मंदिर से लगभग पांच कि.मी. दूर सोमशिला जलाशय नेल्लूरू जिले का सबसे बड़ा बांध है। इस क्षेत्र के लिए बेहतर सिंचाई क्षमता सृजित करने के लिए एक परियोजना की परिकल्पना करते हुए, पेन्नार नदी (कृष्णा की एक उपनदी) पर अनंत सागरम मंडल के सोमशिला गांव के पास बांध बनाया गया था। सोमशिला जलाशय को कृष्णा नदी बेसिन में स्थित श्रीशैलम जलाशय से जोड़कर पानी उपलब्ध कराया जाता है। बांध के पानी का उपयोग घरेलू और कृषि कार्यों के लिए किया जाता है। पहले तो सोमशिला बांध नेल्लूरू जिले के बाहरी छोर पर पूर्वी घाटों से घिरा हुआ होने के कारण और दूसरे यहां पर समृद्ध प्राकृतिक वनस्पतियों और जीवों की उपस्थिति के कारण यहां की प्राकृतिक सुंदरता देखने लायक है। शुरू में यह स्थान स्थानीय निवासियों के बीच एक पिकनिक स्पॉट के रूप में प्रसिद्ध था। धीरे-धीरे पर्यटकों की बढ़ती संख्या को देखते हुए, जिला पर्यटन संवर्धन समिति द्वारा इसे एक अच्छे खासे पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया गया है।

समिति द्वारा पर्यटकों के लिए रिसॉर्ट के अलावा, यहां रिवर क्रूज की भी व्यवस्था की गई है। अब यह भारत के सभी आगंतुक पर्यटकों के लिए एक लोकप्रिय ईको-पर्यटन स्थल है।

गांधी आश्रम :

इंदुकुरपेट में स्थित पिनाकिनी सत्याग्रह आश्रम नेल्लूरू के साथ महात्मा गांधी के जुड़ाव की जीवंत स्मृति है।

पेन्ना नदी के तट पर स्थापित किए गए इस आश्रम का 7 फरवरी-1921 को स्वयं गांधी जी ने उद्घाटन किया था और इसने गांधी जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। आज इस आश्रम को पल्लीपाडु गांधी आश्रम के नाम से जाना जाता है। आंध्र प्रदेश में अपनी तरह का एक और राष्ट्रीय स्तर पर साबरमती में गांधीजी के आश्रम के बाद दूसरे स्थान पर अपना महत्व रखता है।

रहमताबाद :

नेल्लूरू शहर से लगभग 50 कि.मी. और आत्मक्कुर से 10 कि.मी. दूर, रहमताबाद एक प्रसिद्ध सूफी संत नयाब-ए-रसूल और उनकी बेगम हबीबा के मकबरों के लिए पूरे क्षेत्र में प्रसिद्ध है।

दरगाह पर की गई नक्काशी

संत और उनकी बेगम का मकबरा

वह एक महान सूफी संत थे जिन्होंने अपने पूरे जीवन में मानवता और मानव जाति के लिए सेवाएं प्रदान कीं और शांति का संदेश दिया और जाति, पंथ या रंग के लोगों को अच्छे उपदेश दिए। अक्सर हर जाति, पंथ, धर्म और स्थिति के हजारों भक्त अनुयायियों का आगमन देखा जाता है। मस्जिद के द्वार पर एक शिलालेख है जिस पर लिखा है "यह पत्थर मदीना मुनव्वराह से लाया गया है" लेकिन यह निश्चित नहीं है कि ख्वाजा रहमतुल्लाह खुद पत्थर लाए थे या किसी और के माध्यम से प्राप्त किया था। आज एक भव्य गुंबद हजरत ख्वाजा रहमतुल्लाह

और अम्माजन के मजार-ए-अकदस को सुशोभित करता है। यहां जून-जुलाई के महीनों में उर्स मनाया जाता है। उस दौरान हजारों लोग यहां आते हैं। इसलिए त्योहार का सा माहौल हो जाता है।

कृष्णापट्टनम पोर्ट एंड थर्मल संयंत्र (के.पी.पोर्ट) :

नेल्लूरू शहर से मात्र 24 कि.मी. की दूरी पर स्थित, कृष्णापट्टनम बंदरगाह को भारत का निजी स्वामित्व वाला सबसे बड़ा विश्व स्तरीय बंदरगाह माना गया है। यह दुनिया के बहुत कम बंदरगाहों में से एक है जो 1,50,000 टन की भार क्षमता वाले विशाल जहाजों का प्रबंधन कर सकते हैं। इसे नवयुग कंपनी द्वारा विकसित किया जा रहा है। कृष्णा पट्टनम एक प्रमुख बंदरगाह के साथ ही एक बाजार केंद्र भी है। इस बंदरगाह से चीन सहित अन्य दक्षिण पूर्व एशियाई देशों को लौह अयस्क और ग्रेनाइट का निर्यात किया जाता है। यहां पर्यटकों को एक नाम मात्र के निश्चित शुल्क और जांच के बाद ग्रुप में अंदर जेट्टी तक जाने की अनुमति दी जाती है।

वेंकटगिरी साड़ी :

वेंकटगिरी साड़ी का इतिहास 1700 के दशक की शुरुआत का है जिसे नेल्लूरू के वेलुगोटी राजवंश और बोब्बिली और पिठापुरम राजवंशों द्वारा प्रोत्साहित किया गया था। उन दिनों ऐसे वस्त्र केवल वे ज्यादातर शाही महिलाओं के लिए बुने जाते थे। अब यह गांव इतिहास और हथकरघा के लिए एक प्रसिद्ध नाम बन गया है। जामदारी तकनीक में बुनी गई इन साड़ियों को आंध्र प्रदेश केजीआई टैग (Geographical Indications), (जिसे हिंदी में भौगोलिक संकेतक नाम से जाना जाता है), में से एक के रूप में भी पंजीकृत किया गया है। इसलिये भी हमें हथकरघा के इन शिल्पकार कारीगरों को याद रखना चाहिए।

वेंकटगिरी साड़ी का प्रतीकात्मक चित्र

नेल्लूरू की यात्रा का समय :

बंगाल की खाड़ी से लगभग 20 कि.मी. दूर होने के कारण, नेल्लूरू शहर का मौसम एक विशिष्ट उष्णकटिबंधीय समुद्री प्रकृति का है। इसलिए मौसम में आर्द्रता भरी गर्मी पाई जाती है, सर्दियां तो बस नाममात्र की होती है। अप्रैल और मई के महीनों में मौसम बहुत गर्म रहता है और यह स्थिति आम तौर पर जून के अंत तक रहती है। लेकिन समुद्र से आने वाली ठंडी हवाएं शाम के समय शहर को खुशनुमा जलवायु प्रदान करती है। इसलिए नेल्लूरू घूमने लिए दिसंबर से फरवरी का समय ही सबसे अच्छा समय कहा जा सकता है।

नेल्लूरु कैसे पहुंचें :

वायु मार्ग: नेल्लूरू में अभी तक कोई हवाई अड्डा नहीं है। निकटतम हवाईअड्डा तिरुपति(128 कि.मी.) है जहां से टैक्सियां अथवा राज्य सरकार की बसें मिल जाती है।

रेल मार्ग: दक्षिण मध्य रेलवे के तहत नेल्लूरू का सुव्यवस्थित रेलवे स्टेशन है और यह देश के लगभग सभी बड़े नगरों से जुड़ा है। प्रति दिन 132 एक्सप्रेस रेलगाड़ियां इस स्टेशन से गुजरती हैं। हाल ही नेल्लूरू रेलवे स्टेशन को देश के 28वें सबसे स्वच्छ रेलवे स्टेशन के रूप में स्थान दिया गया है।

सड़क मार्ग: नेल्लूरु कोलकाता - चेन्नई राजमार्ग के द्वारा तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, ओडिशा और पश्चिम बंगाल राज्यों से सुव्यवस्थित रूप से जुड़ा हुआ है।

----

*सम्प्रति : निजी सचिव, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।

रूसी कहानी

अपराधी

*मूल लेख: एंटन चेखव

**प्रस्तुती (अनुवाद): सुशांत सुप्रिय

धारीदार क़मीज़ और पैबंद लगी पतलून पहने एक बहुत पतला दुबला, छोटे क़द का किसान अदालत में न्यायाधीश के सामने खड़ा है। उसके चेहरे पर बहुत बाल और चेचक के दाग़ हैं और उसकी घनी भौंहों के पीछे में छिपी उसकी मुश्किल से दिखने वाली आंखों में उदासी भरी हुई है। उसके सिर पर उलझे हुए, गंदे बालों के गुच्छे हैं जिनकी वजह से उसके चेहरे पर छाई मलिनता और प्रगाढ़ हो जाती है। वह वहां नंगे पैर खड़ा है।

"डेनिस ग्रेगोरयेव !" न्यायाधीश ने बोलना शुरू किया। "पास आओ और मेरे प्रश्नों के जवाब दो। जुलाई के इस महीने की सात तारीख़ के दिन रेलवे का चौकीदार ईवान सेम्योनोविच ऐकिनफ़ोव सुबह के समय रेल की पटरियों के पास गश्त लगा रहा था। तब उसने तुम्हें एक सौ चौदहवें मील पर रेल की पटरियों से जोड़ने वाले स्लीपर का एक पेंच खोलते हुए रंगे हाथों पकड़ा। यह रहा वह पेंच !... उसने तुम्हें इस पेंच के साथ गिरफ़्तार कर लिया था। क्या यही हुआ था? "क ...क्या ? "

"क्या जैसा ऐकिनफ़ोव ने कहा है, वैसा ही हुआ था? "

"जी, जनाब, यह सच है।"

"ठीक है, तो तुम वह पेंच क्यों खोल रहे थे ? "

"क...क...क्या? "

" क्या, क्या मत करो और सवाल का जवाब दो। तुम वह पेंच क्यों खोल रहे थे ? "

"अगर मैं नहीं चाहता तो मैं वह पेंच नहीं खोलता।" छत की ओर देखते हुए डेनिस ने कर्कश आवाज़ में कहा ।

"तुम्हें वह पेंच क्यों चाहिए था?"

"पेंच...पेंच...? हम मछलियां पकड़ने वाली अपनी डोरी के लिए उससे वज़न बनाते हैं ।"

"हम... हम, कौन है? "

"हम... यानी...हम सब लोग..., मतलब क्लिमोवो के किसान !"

"सुनो, मेरे सामने मूर्ख बनने का अभिनय मत करो। ढंग से बताओ, वज़न बनाने के बारे में यहां झूठ बोलने की ज़रूरत नहीं !"

"मैंने बचपन से ही कभी झूठ नहीं बोला है...,और अब आप मुझ पर इल्ज़ाम लगा रहे हैं कि मैं झूठ बोल रहा हूं।" पलकें झपकाते हुए डेनिस ने कहा। " बिना वज़न के आप क्या करेंगे,

श्रीमान जी? अगर हम कीड़ा या अन्य जीवित चारा हुक में फंसाएंगे तो क्या वह बिना वज़न के नदी के तल पर पहुंच पाएगा ? ... और आप कह रहे हैं, मैं झूठ बोल रहा हूं।" डेनिस खीसें निपोर कर बोला ।

"उस कीड़े का फ़ायदा ही क्या. जो पानी की सतह पर ही तैरता रहे?" सारी मछलियां तो समुद्र के तल के पास चारा ढूंढ़ती हैं । केवल शिलिस्पर मछली ही पानी की सतह पर तैरती है.... और हमारी इस नदी में शिलिस्पर नाम की मछलियां नहीं पाई जाती हैं ... इन मछलियों को बहुत सारी जगह चाहिए।"

"तुम मुझे शिलिस्पर मछलियों के बारे में क्यों बता रहे हो? "

"जी...जी... श्रीमान? आपने खुद ही तो मुझसे पूछा है। हमारे इलाक़े में भी आम किसान ऐसे ही मछलियां पकड़ते हैं। सबसे बेवकूफ छोटा बच्चा भी बिना किसी वज़न के मछलियां नहीं पकड़ेगा। हां, जिसे मछलियां पकड़ना आता ही नहीं, वह ज़रूर ऐसा करेगा। बेवक़ूफ़ों के लिए कोई नियम थोड़े ही होता है।"

अदालत का एक प्रतीकात्मक चित्र

"यानी तुम कहना चाहते हो कि तुमने अपनी मछली पकड़ने वाली डोरी में वज़न लगाने के लिए यह पेंच वहां से चुराया... या फिर खोल कर निकाला?"

"और किस लिए? मैंने उसे कोई खेल खेलने के लिए थोड़े ही वहां से निकाला?"

"पर तुम इसके बदले कोई कील या बंदूक़ की गोली या ... सीसे का टुकड़ा भी तो ले सकते थे ..."

"जी...पर...सीसे का टुकड़ा सड़क पर गिरा हुआ थोड़े ही मिलता है, उसे ख़रीदना पड़ता है। कील का कोई फ़ायदा नहीं। पेंच से बढ़िया कोई और चीज़ नहीं होती ... पेंच भारी होता है और इसमें छेद भी होता है ।"

जज सोचने लगा कि यह आदमी लगातार बेवक़ूफ़ बनने का अभिनय कर रहा है ! जैसे यह कल

ही पैदा हुआ हो या सीधे स्वर्ग से यहां आ टपका है।

"हो ना मूर्ख! ... अरे भले आदमी, क्या तुम्हें यह पता नहीं कि इन पेंचों को खोलने से क्या होता है ? यदि चौकीदार ने यह नहीं देखा होता तो वहां से गुजरने वाली कोई भी रेलगाड़ी पटरी से उतर सकती थी । बहुत सारे लोग इस दुर्घटना में मारे जाते। तुम्हारी वजह से कितने ही लोगों की जान चली जाती ।"

"हे ईश्वर! यह आप क्या कह रहे हैं....श्रीमान जी ? मैं उन लोगों को क्यों मारूंगा ? क्या मैं कोई विधर्मी या शैतान हूं ? ईश्वर का शुक्र है कि मैंने अपना सारा जीवन बिना ऐसी कोई बात सोचे हुए गुज़ार दिया ... स्वर्ग की मलिका मुझ पर दया करें ... यह आप क्या कह रहे हैं ? "

"और तुम्हें क्या लगता है, रेलगाड़ियां कैसे दुर्घटना-ग्रस्त होती हैं ?तुम जोड़ों से दो-तीन पेंच निकाल लो और दुर्घटना हो जाती है।"

डेनिस अपनी खीसें निपोरता रहा और अपनी नज़रें नीची किए हुए बीच बीच में न्यायाधीश की ओर ऐसे देखता है जैसे उसे उनकी बात पर यक़ीन नहीं हो।

"श्रीमान! गांव में हम सब तो बरसों से पटरियों के जोड़ों से पेंच निकालते रहे हैं। ईश्वर हम पर दयालु रहा है.... आप दुर्घटनाओं और लोगों को मारने की बात करते हैं । अगर मैं पटरी का एक हिस्सा उखाड़ कर ले जाता या पटरी पर किसी पेड़ का मोटा तना रख देता,...तब शायद रेल-गाड़ी दुर्घटना-ग्रस्त हो जाती । लेकिन ... केवल एक पेंच से... हे ईश्वर !"

" लेकिन तुम्हें पता होना चाहिए कि यह पेंच ही तो स्लीपरों को रेल-लाइनों से जोड़े रखता है !"

" हम सब यह समझते हैं ... इसलिए हम सभी पेंचों को नहीं निकालते हैं ... हम काफी कुछ दूरी के बाद एक पेंच लेकर बाकी पेंचों को वहीं लगा हुआ छोड़ देते हैं ... हम बिना सोचे-समझे यह काम नहीं करते हैं ... हम समझते हैं ...!" डेनिस जम्हाई एक ली और हाथ से अपने चेहरे के सामने हवा में सलीब का चिन्ह बनाया, जैसे ईश्वर को याद कर रहा ।

" पिछले साल यहीं पर एक रेल लगाड़ी पटरियों से उतर गई थी।" न्यायाधीश ने कहा। " अब मैं समझ सकता हूं कि ऐसा क्यों हुआ था ।"

"यह आप क्या कह रहे हैं, श्रीमान? "

"हां, मैं तुम्हें यह बता रहा हूं कि अब मैं जानता हूं कि वहां रेल-गाड़ी के डब्बे पटरियों से कैसे उतरे ... अब मैं समझ सकता हूं!"

"श्रीमान जी! आप पढ़े लिखे लोग इसीलिए तो हैं कि आप सब कुछ समझ सकते हैं, ईश्वर जानता है कि समझ किसे देनी चाहिए... अब यहां आपने कैसे और क्या के बारे दलील दी है, लेकिन यह इस चौकीदार या हमारे जैसे किसानों को बिल्कुल समझ नहीं है । हम लोग बिना कुछ समझे दूसरों को थप्पड़ मार देते हैं... यह चौकीदार किसी को भी कॉलर से पकड़ कर क़ैद कर लेते हैं । इस चौकीदार को पहले मुझे कारण बताना चाहिए था... मेरी बात भी सुननी चाहिए

थी....मैने सही कहा, ना ....आप सहमत होंगे। उसके बाद मुझे पकड़ना चाहिए थ। हमारे यहां एक कहावत है कि एक किसान के पास किसान बहुत ही कम अक़्ल होती है ... लिखिए श्रीमान जी, इस चौकीदार ने दो बार मेरे मूंह पर और छाती पर मारा ।"

"जब तुम्हारी झोंपड़ी की तलाशी ली गई तो वहां से पटरियों और स्लीपरों के जोड़ से खोली गई एक और पेंच बरामद की गई है... यह पेंच तुमने रेल की पटरी और स्लीपर के जोड़ से किस जगह से खोली और यह काम तुमने कब किया? "

"क्या आप उस पेंच की बात कर रहे हैं जो लाल बक्से के नीचे पड़ी हुई थी?"

"मुझे नहीं पता, यह पेंच कहां पड़ी हुई थी पर यह तुम्हारी झोंपड़ी से बरामद हुई । यह पेंच तुमने पटरी और स्लीपर के जोड़ से कब खोली? " न्यायाधीश ने प्रश्न किया ।

"मैंने यह पेंच नहीं निकाला था। एक आंख वाले सेम्योन के बेटे इग्नाश्का ने मुझे यह पेंच दिया था । मैं उस पेंच की बात कर रहा हूं, जो बक्से के नीचे पड़ा हुआ था । लेकिन बरामदे में हथौड़े के पास पड़े पेंच को तो मित्रोफ़ैन और मैंने मिल कर पटरियों से खोला था ।"

"अच्छा... तो अब यह मित्रोफ़ैन कौन?"

"मित्रोफ़ैन पेत्रोव...आपने उसके बारे में नहीं सुना? वह हमारे गांव में जाल बनाता है और लोगों को बेचता है । उसे ऐसे बहुत सारे पेंचों की ज़रूरत होती है । मुझे लगता है...हर जाल के लिए उसे दस पेंचों की ज़रूरत होती ही होगी ।"

"सुनो..., दंड संहिता के अनुच्छेद 1081 के अनुसार स्वेच्छा से और जानबूझकर रेल की पटरियों और लोगों के जीवन को नुक़सान पहुंचाने वाले किसी भी कृत्य को करने वाले व्यक्ति को कठोर कारावास की सज़ा दी जाएगी । ऐसे व्यक्ति को पता होता है कि ऐसा करने से रेलगाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो सकती है ... तुम समझ रहे हो न... मैं क्या बताना चाहता हूं!"

"जी, श्रीमान जी, आप बेहतर समझते हैं,हम तो अज्ञानी है ... हमें भला इतनी समझ कहां है? "

"तुम इसके बारे में सब कुछ समझते हो ! तुम झूठ बोल रहे हो...बेशर्म आदमी !"

"मैं भला झूठ क्यों बोलूंगा? अगर आपको मेरी बात पर भरोसा नहीं है तो आप गांव में किसी से भी पूछ लीजिए, हमारे गांव में तक़रीबन सभी के पास पेंच होती है । कोई भी मछली बिना पेंच के भार के चारा नहीं खाती।"

"अब तुम मुझे शिलिस्पर मछली के बारे में बताओगे।" न्यायाधीश ने मुस्कुराते हुए कहा ।

"हमारे इलाक़े में शिलिस्पर मछलियां नहीं पाई जाती हैं... जब हम चारे में तितली पकड़ कर लगाते हैं और बिना भार के उसे पानी की सतह पर डालते हैं तो उससे हम केवल पांच कोने वाले तारे के आकार की मछलियां ही पकड़ पाते हैं और वह भी कभी-कभी ही।"

"बंद करो अपनी बकवास और चुपचाप खड़े रहो! " न्यायाधीश गरज उठे।

अदालत में एकदम से चुप्पी छा गई। डेनिस कभी एक पैर पर अपनी देह का भार डालता है तो कभी दूसरे पैर पर, वह हरे कपड़े वाली मेज की ओर देखता है और बहुत तेज़ी से अपनी पलकें

झपकाने लगा। ऐसा लगता है कि उसने हरे कपड़े को नहीं, चमकते हुए सूरज को ही देख लिया हो । न्यायाधीश ने एक काग़ज़ पर तेज़ी से कुछ लिखना शुरू किया है। अदालत में ऐसी शान्ति थी मानो लोग सांस भी गिन गिन कर ले रहे थे। एक लम्बी चुप्पी के बीच डेनिस ही बोल पड़ा और उसने पूछने लगा, "तो श्रीमान, क्या अब मैं जा सकता हूं ? "

"नहीं । मैं तुम्हें कारागार भेज रहा हूं ।"

डेनिस अपनी पलकें झपकाना बंद करके सवालिया निगाहों से न्यायाधीश को देखने लगा।

"कारागार से आपका क्या मतलब है? श्रीमान जी, मेरे पास ख़ाली बैठने का समय नहीं है। शाम को मेले लगेगा और मेरा मेले में जाना ज़रूरी है, वहां मुझे येगोर से तीन रूबल लेने हैं ताकि मैं तेल ख़रीद सकूँ ! ... "

"चुप खड़े रहो । मुझे सज़ा निर्धारित करने दो ।"

"कारागार में ... अगर मैंने वाक़ई कुछ ग़लत किया होता तो मैं वहां ज़रूर चला जाता। बिना किसी ग़लती के मुझे वहां किसलिए भेज रहे हैं ?मुझे पूरा विश्वास है कि मैंने कोई चोरी नहीं की है। मैं किसी से झगड़ा नहीं कर रहा था ... अगर आपको बकाया रूबल के बारे में शक है... तो, श्रीमान जी, आप उस बुज़ुर्ग की बातों में नहीं आएं ... वह बुड्ढा तो पूरा विधर्मी है... आप गुमाश्ते से पूछिए।”

"चुप रहो।"

"मैं तो चुप ही हूं। ” डेनिस बुदबुदाया, "लेकिन मैं क़सम खा कर यह कह सकता हूं कि उस बुड्ढे ने खाते के बारे में आपसे झूठ बोला है ... हम तीन भाई हैं – कुज़्मा ग्रिगोरयेव, येगोर"

तभी ठक - ठक कर, न्यायाधीश का हथौड़ा बजा.... और उनकी आवाज गूंजने लगी...."रेल की पटरी से पेंच चुराने के आरोप में, दंड संहिता के अनुच्छेद 1081 के अनुसार डेनिस ग्रेगोरयेव को एक सप्ताह के कारावास की सजा दी जाती है।"

- सम्प्रति : लोकसभा, भारत सरकार में अधिकारी। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं तथा चैनलों में साहित्यिक कार्यकलाप। अतुल्य भारत में नियमित योगदान। A-5004, गौड़, ग्रीन सिटी, वैभव खंड, इंदिरापुरम, गाजियाबाद (उ.प्र.)

यूं तो घर में ही सिमट आई है दुनिया सारी

हो मयस्सर तो, कभी घूम के दुनिया देखो।

- जमील मलिक

******

यात्रा संस्मरण

धरती पर एक स्वर्ग

*डा. सुशांत कुमार सेनापति

लद्दाख का अर्थ पर्वत मालाओं के बीच ऊंचे-ऊंचे पर्वतीय मार्ग है। यह वर्तमान भारत का एक संघ शासित प्रदेश है। इसके पूर्व यह जम्मू व कश्मीर राज्य का एक अंग था। इसके पूर्व दिशा में तिब्बत (चीन) दक्षिण में हिमाचल प्रदेश एवं पश्चिम में बाल्तिस्तान (पाकिस्तान) है। दक्षिण-पूर्व में काराकोरम पास तथा पूर्वोत्तर शेष में अक्साई चिन है। वर्तमान लद्दाख दो जिलों में बंटा हुआ है : लेह एवं कारगिल। लद्दाख का मुख्यालय लेह शहर है। लद्दाख में मूल रूप से छः नदियां हैं सिन्धु, श्योक एवं नुब्रा तीन नदियां लेह जिले में और शेष तीन सुरू, द्रास, एवं ज़ंस्कार कारगिल जिले में है। हर नदी अपनी-अपनी घाटियों के लिए प्रसिद्ध है जैसे ज़ंस्कार घाटी, सिन्धु घाटी, नुब्रा घाटी और इसमें आबादी बसी हुई है। लगभग लद्दाख के सारे क्षेत्र में नंगे पहाड़ है, पेड-पौधे तथा घास भी दिखाई नहीं देते हैं। अतः पूरे क्षेत्र में ऑक्सीजन की कमी है। लेकिन यहां के स्थानीय लोगों को आदत ही पड़ गई है। जो समतल भूमि से जाते है, उन्हें ऑक्सीजन की कमी दूसरे शब्दों में 'हाई एल्टीट्यूड सिकनेस' से जूझना पड़ता है। लद्दाख के घाटी क्षेत्र में स्थानीय लोग रहते हैं लेकिन पूरे क्षेत्र में कम आबादी है। भारत का एक अन्तर्राष्ट्रीय संवेदनशील क्षेत्र होने के नाते, लद्दाख में हर जगह भारतीय सेनाओं के स्थायी/ अस्थायी कैम्प दिखाई देते हैं।

जून महीने के अंत में हमने परिवार के साथ लद्दाख यात्रा की और हमने सिर्फ लेह जिले का ही भ्रमण करने के लिए पांच दिन का कार्यक्रम बनाया था। पहला दिन तो विमान यात्रा से लेह पहुंचें और सीधे पहले से ही बुक किए हुए एक अतिथि गृह में आए तथा वहां आसपास घूमने में ही बीत गया। 24 घंटे बिताने के बाद दूसरे दिन दोपहर बाद हमने ज़ंस्कार घाटी की ओर घूमने जाने का कार्यक्रम बनाया था।

सिन्धु नदी, लेह शहर

लेह में प्रथम दिन हम संगम तक गए जहां सिन्धु नदी तथा ज़ंस्कार नदी का मिलन हुआ है। यह लेह से सिर्फ 35 कि. मी. की दूरी पर लेह - श्रीनगर राजमार्ग पर अवस्थित है। यहां का प्राकृतिक मनोरम दृश्य दिल छू लेता है।

सिन्धु नदी का जल नीले रंग का तथा ज़ंस्कार नदी के जल का रंग मटमैला यानि भूरे रंग का होता है। संगम का यह एक अद्भूत दृश्य है।

(सिन्धु नदी तथा जंस्कार नदी का संगम स्थल)

यहां ज़ंस्कार घाटी में थोड़ी सी हरियाली तथा छोटे से आकार का शहर बन गया है। यहां नदी में राफ्टिंग के लिए व्यवस्था है। यहां पर दोनों नदियों के साथ - साथ सड़क गुजरती है, जो सीमा सड़क संगठन (बॉर्डर रोड ऑर्गेनाजेशन) द्वारा बनाया गया है। BRO के बोर्ड हर जगह दिखाई पड़तें है। लेह के संगम स्थल जाने के रास्ते में चुम्बकीय पर्वत (magnetic hill) आते हैं।

यह रास्ता चारों तरफ नंगी (वृक्ष और हरियाली के बिना) पहाडी के बीच से गुजरता है। कहा जाता है कि भौतिकीय आर्कषण के चलते यहां की पहाड़ी वाहनों को अपनी ओर खींचती है। हम लोगों को गाड़ी से उतारने के बाद, चालक ने गाड़ी का संचालन बंद कर दिया, लेकिन फिर भी वहां और ढलान न होने के बावजूद गाड़ी धीरे-धीरे आगे बढ रही थी।

चुम्बकीय पर्वत पर लेखक परिवार के साथ

संगम स्थल से लौटते समय हमने गुरूद्वारा पत्थर साहब के दर्शन किए।

स्थानीय विश्वास के अनुसार पांचवीं सदी में गुरू नानक जी इस स्थान पर पधारे थे और कुछ दिन रुके थे। उस समय यहां पर एक दैत्य का बोलबाला था। स्थानीय लोगो ने दैत्य से बचने के लिए संत से गुहार लगाई और उसी समय दैत्य ने एक बड़ा सा पत्थर फेंका और वह पत्थर संत के पैर पर लगने से मोम (wax) बन गया और तब से यह स्थान पत्थर साहब गुरूद्वारा के नाम से जाना जाता है।

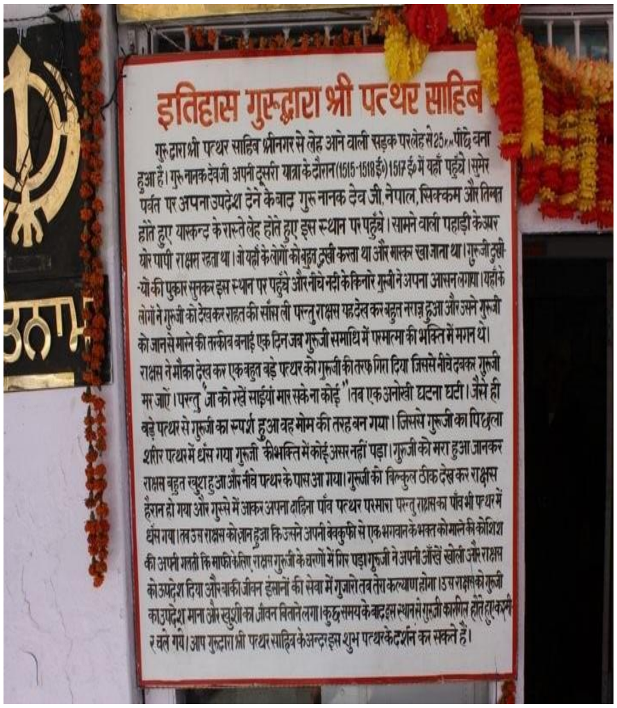

पत्थर साहब गुरूद्वारा

यह बहुत ही सुन्दर स्थान है। स्थानीय लोग तथा भारतीय सेना मिलकर इसका रखरखाव करते हैं। यहां लंगर तथा 24 घंटे चाय पीने की व्यवस्था है। हम पत्थर साहब गुरूद्वारा के प्रसाद तथा चाय का आनन्द लेते हुए आते समय 'हॉल ऑफ फेम संग्रहालय' देख कर आए यहां पर भारतीय सेनाओं की वीरता की कहानी है और कारगिल युद्ध विजय से जुड़ी हुई विभिन्न यादगारों एवं लेह का मानचित्र भी बहुत अच्छे से संजोया हुआ है।

दूसरे दिन सुबह जल-पान के बाद, हम लेह टैक्सी यूनियन से गाड़ी लेकर नुब्रा घाटी की ओर चल पड़े। कार्यक्रम के अनुसार हमें खरदुंगला पास (Khardungla pass) से गुजरते हुए, रात को हुन्डेर गांव में ठहरना था तथा दूसरे दिन प्रातः श्योक घाटी के मार्ग होते हुए पेगांग झील जाना था और उसी दिन चांग ला पास होकर लेह वापस आना था।

अतः हमने निर्देश के अनुसार Inner Line Pass बनवा लिया था, जो मूलतः पर्यावरण शुल्क है और हर यात्री के लिए लेना आवश्यक होता है। यह पास लेह जिला कमिश्नर कार्यालय से जारी किया जाता है और मार्ग में बनी कई चौकियों पर इसकी जांच होती है।

हमें दो उंचे पर्वतों वाले मार्ग से होकर गुजरना था, जहां ऑक्सीजन की काफी कमी होती है। अतः पूर्व सावधानी के तौर पर एक ऑक्सीजन सिलेण्डर तथा सिलेण्डर लगाने की मशीन गाड़ी में रख लिए थे। इस तरह का सामान लेह शहर की दुकानों में किराए पर मिल जाता है। नुब्रा घाटी के लिए लेह शहर से जैसे पहाडों पर चढना प्रारम्भ किया और ऊपर आने पर हमारे कार ड्राइवर ने कुछ क्षणों के लिए गाड़ी को रोक दिया क्योंकि वहां से पूरे लेह शहर का नजारा दिखाई दे रहा था। हमने यहां से लेह शहर के नजारों को अपने कैमरे में कैद किया। फिर हम नंगे पर्वतमालाओं के बीच ऊपर की ओर चढ़ने लगे। ऊपर की ओर चोटियां बर्फ से ढ़की हुई थी और उन पर से धूप, ऐसे लग रहा था जैसे पर्वतों के सिर पर कोई चांदी की टोपी पहना दी गई हो।

खरदुंगला पास लेह में उत्तरी दिशा में है, इसकी उंचाई 5359 मीटर है, जो सिन्धु घाटी तथा श्योक घाटी को जोड़ता है। इसे विश्व के सबसे उंचाई वाले मोटर मार्ग के रूप में जाना जाता है। खरदुंगला मार्ग को नुब्रा घाटी का प्रवेश द्वार भी कहते है, जो सियाचीन ग्लेश्यिर की तरफ बढ़ता है। इस रोड़ की देखभाल सीमा सड़क संगठन द्वारा की जाती है।

खरदुंगला टॉप पर लेखक

खरदुंगला मार्ग लेह से चढ़ाई के समय, 39 कि.मी. की दूरी पर एक जांच चौकी (check point) है जिसे South pullu तथा उत्तरी दिशा में यानी नुब्रा घाटी की ओर की जांच चौकी को North pullu कहा जाता है। हम जब खरदुंगला मार्ग के सबसे ऊपर में पहुंचें तो नजारा सिर्फ बर्फ ही बर्फ, रास्ते में चारों तरफ, पर्वतों की चोटी तथा ढलान बर्फ से लदा पड़ा था।

यह जून महीने के तीसरे सप्ताह की बात है। हम सोच रहे थे कि दिसम्बर से अप्रैल महीने तक कितनी फीट बर्फ जमा होती होगी। इसलिए शीत ऋतु में मार्ग बंद हो जाता है।
हमने खरदुंगला की चोटी का आनन्द लिया तथा यादगार के लिए कुछ फोटोग्राफ भी लिए। इस जगह पर पार्किंग की व्यवस्था नहीं के बराबर है और एक ही साइड से वाहनों की लम्बी कतार बन गई थी। वाहनों के धुएं से वातावरण प्रदूषित हो रहा था और जो भी ऑक्सीजन हमारे पास था वह भी कम हो रहा था। हम सिर्फ 10 मिनट रुके होंगे और फिर नुब्रा घाटी की ओर चल पड़े।

नुब्रा घाटी का रास्ता

रास्ते के बीच-बीच में खास कर दोनों पुलों में भारतीय सेनाओं के कैम्प दिखाई दिए और छः घण्टे पर्वतों को चीरते हुए हम नुब्रा घाटी के नजदीक दिस्कित बौद्ध मठ (Diskit Monastery) पहुंचे। इसे दिस्कित मठ या दिस्कित गोम्पा के नाम से भी जाना जाता है। लगभग 10,480 फिट की उंचाई पर स्थित यह लेह जिले की नुब्रा घाटी में सबसे पुराना और सबसे बड़ा बौद्ध मठ है।

दिस्कित बौद्ध मठ

यहां भगवान बुद्ध की एक विशाल मूर्ति देखकर तो हम स्तंभित रह गए। सोचने लगे कि पहले इस दुर्गम इलाके में इतने अच्छे बुद्ध विहार कैसे बनाए गए होंगे, वह भी उस समय जब वाहन जाने का कोई भी मार्ग नही था। यह काफी उंचाई पर है वहां से नुब्रा घाटी तथा नुब्रा और श्योक नदी का संगम स्थल भी दिखाई देता है।

नुब्रा घाटी: यह घाटी एक संगम स्थल है और पहाडों के बीच नदियों के तटीय क्षेत्र में रेतीली भूमि है और वहीं पर हुण्डेर गांव बसा है। हमने वहां उतर कर उस रेतीली भूमि पर, यहां के दो

कूबड वाले ऊंटों की सवारी का आनंद लिया। जिनके बारे में हमें बताया गया कि यह ऊंट की बैक्ट्रियन प्रजाति (कैमल्स बैक्टिरियन्स) है, जिसे मंगोलियाई ऊंट के रूप में भी जाना जाता है। यह मूल रूप से मध्य-पूर्वी एशिया के मैदानों में मिलता है। विश्व के अन्य स्थानों पर पाए जाने एक कूबड वाले ऊंटों से अलग, इसकी पीठ पर **दो कूबड़** होते हैं।

यहां पर्यटकों के लिए 'कैमल सफारी' की सुविधा है।

नुब्रा घाटी में बालू के टीले का दृश्य

यहां शाम देर से होती है, करीब साढ़े सात बजे के आसपास सूरज अस्त हो रहा था। रात को नुब्रा घाटी से सटे हुण्डेर गांव में ही विश्राम किया। यहां काफी मात्रा में होटल, गेस्ट हाउस तथा अस्थायी टेन्ट हाउस है। यहां पर्यटन की व्यस्ततम अवधि (peak seasons) शुरू हो चुकी थी

तथा हर जगह पर्यटकों की भीड़ देखने को मिली। हुण्डेर गांव में होटल/ गेस्ट हाउस सभी सुविधाएं मिल जाती है।

मैने गेस्ट हाउस के मालिक से बात की उसने बताया कि पिछले दो सालों से कोविड के चलते 'टूरिस्ट' नहीं के बराबर आ रहे थे। ऐसे भी छः महीने मई से अक्तूबर तक की रौनक है फिर सब कुछ बन्द हो जाता है तथा यहां के युवक लद्दाख के बाहर श्रीनगर, जम्मू, हिमाचल, चंडीगढ़ की तरफ किसी और दूसरे रोजगार की तलाश में चले जाते है। हमने सुबह अतिथि गृह के चारों ओर का नजारा लिया। सेब व आड़ू से लदे हुए पेड़ों का बगीचा तथा हमें सब्जी की खेती भी दिखाई दी जहां मटर, गोभी, धनिया आदि की फसलें थी। उन्होनें देशी काली गाय भी पाली हुई थी जिसके दूध से हमें गर्मा गरम चाय पिलाई।

तीसरे दिन हम जल्दी में चाय पीकर सुबह 7.00 बजे ही पांगोंग झील की ओर चल पड़े। वही पर्वतीय मार्ग लेकिन इस बार श्योक नदी के साथ, कभी ऊपर तो कभी नीचें, कच्चे-पक्के रास्ते से बढ़ते चले गए। लेह का गाड़ी चालक अनुभवी था, अतः आराम से चिन्ता मुक्त होकर गाड़ी चला रहा था।

करीब पांच घण्टे बीतने के बाद हम आघम, डुर्बुक, लुकुंग, तांगस्टे, स्पेंगमिक तथा मीराखोकर होते हुए पांगोंग झील पहुंचे। सुबह का जलपान तथा दोपहर का भोजन भी हमने रास्ते में ले लिया था। पहुंचने के 15 मिनट पहले ही रास्ते से पांगोंग झील दिखाई देने लगी थी जिसकी एक झलक देखने के लिए हम उद्विग्न थे। अंत में हम पांगोंग झील पहुंचे यहां आर्मी का कैम्प, कुछ अस्थायी खान पान की दुकानें एवं गाड़ी खड़ी करने की पार्किंग बनाई गई है। जिसे देखने के लिए हमारे मन में एक विलक्षण कौतुहल चल रहा था, अब वही झील प्रत्यक्ष के रूप में हमारे सामने थी, जिसके दर्शन करने का काफी दिनों से इन्तजार था। इसका जल नीले रंग का और स्वच्छ तथा पारदर्शी है।

चारों तरफ पहाडों से घिरा हुआ भूभाग, चांदी जैसी बर्फ से लदी हुई पहाडों की चोटियां और उनके बीच में इस झील का दृश्य...जो व्यक्ति एक बार देख लेगा, जीवन भर याद रखेगा। बहती हुई ठण्डी - ठण्डी हवाओं के झोंकों के साथ कलकल करते स्वच्छ जल की आवाज भी जैसे बह रही थी। हम भी उस दृश्य को कभी भुला नहीं सकेंगे। यह झील समुद्र तल से 4225 मी. की उंचाई पर है और यह प्रकृति का एक अदभूत रूप है। इसके मनोरम दृश्य से आंखें हटायी नही जाती है।

वहां फोटो खिचवाने के लिए ''थ्री इडियट्स'' फिल्म की शूटिंग का सामान जैसे स्कूटर और बैठने के लिए प्लास्टिक के तीन रंग वाले स्टूल किराये पर मिल रहा था। हम एक स्थानीय निवासी से मिले जो नजदीक गांव में रहता है उससे बातचीत की और उसने बताया कि भारत और चीन

की झड़प के समय वह घोड़े पर गलवन घाटी तक भारतीय सेनाओं के लिए पानी आदि पहुंचा रहे थे।

लद्दाख की प्रसिद्ध पांगोंग झील को पर्यटकों के लिए फिर से खोल दिया गया है।

हम करीब दो घण्टे पांगोंग झील पर बिता कर लेह की ओर चल पड़े। इस झील का दर्शन हमारे लिए एक अदभूत एवं अविस्मरणीय रहेगा। रास्ते में चांगला पास (विश्व के तृतीय उच्चतम मोटर मार्ग) होकर गुजरे।
चांग ला (Chang La) लद्दाख़ क्षेत्र में स्थित एक पहाड़ी दर्रा है। यह 17,590 फीट की ऊंचाई पर काराकोरम की लद्दाख़ पर्वतमाला नामक उपश्रेणी में लेह से पांगोंग त्सो (झील) के मार्ग पर स्थित है। इसे चांगथंग पठार का प्रमुख प्रवेश द्वार माना जाता है।

चांगला पास

चांगला पास भुस्खलन क्षेत्र में आता है। कहीं कहीं अवरूद्ध मार्ग पर मलवा हटाया जा रहा था हम करीब पांच घण्टे का सफर करके रात नौ बजे लेह में अपने विश्राम गृह में पहुंचे। इस यात्रा के चौथे दिन हमने लेह में कुछ स्थानीय बौद्ध मठ, सिन्धु नदी के घाट तथा स्थानीय बाजार का दर्शन किया और पांचवें दिन हमने सुबह-सुबह लेह से विदा ली।

'अतुल्य भारत' के दोस्तों के लिए यह सलाह है कि वे लेह शहर के बाहर घुमने के लिए निम्नलिखित बातें ध्यान रखें : -

1. बेहतर होगा दो परिवार एक साथ जाएं और उसी के अनुसार गाड़ी बुक कराएं।
2. नुब्रा घाटी तथा पांगोंग झील जाने के लिए परिवेश शुल्क देकर Inner Line Permit का प्रवेश पत्र लेकर Pass अपने पास सुरक्षित रखें।
3. पूर्व सावधानी के लिए ऑक्सीजन सिलेण्डर तथा प्रयोग करने का साधन साथ लें, जो कि लेह में किराए पर मिल जाते हैं और स्थानीय चालक प्रशिक्षित होते हैं।
4. सफर के समय भर पेट भोजन न लें तथा हल्का खाना खाएं। फ्लास्क में गुनगुना पानी रखें और बीच-बीच में पीते रहें।
5. साथ में बिस्कुट, चॉकलेट, टॉफी तथा नार्मल सॉफ्ट ड्रिंक रख लेना बेहतर होगा।
6. ऑक्सीजन की कमी (High Altitude Sickness) की पूर्व सावधानी के लिए कुछ दवाईयां अपने साथ जरूर रखें। यह दवाएं लेह में हर केमिस्ट की दुकान में मिल जाती है।
7. खरदुंगला तथा चांगला पास क्रॉस करते समय बहुत ही कम समय के लिए रूकें।
8. गर्म कपड़े पहने तथा कान ढकने के लिए मफलर, कैप आदि रखें।
9. पोस्टपेड कनेक्शन का मोबाइल रखें। प्रत्येक परिवार कम से कम एक मोबाइल पूर्ण रूप से चार्ज करके रखें जो आपातकाल में काम आयेगा।
10. नुब्रा घाटी/ हुण्डेर गांव में रात को ठहरने के लिए होटल/ गेस्ट हाउस आदि पहले से ही बुक करा लें तो बेहतर है।
11. अगर रास्ते में विशेष समस्या आये तो भारतीय सेनाओं या सीमा सड़क संगठन (BRO) से सहायता लें।

-----

*प्रधान तकनीकि अधिकारी, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद - केंद्रिय भवन अनुसंधान संस्थान, रूड़की (उत्तराखंड)

(इस लेख में दिए गए सभी चित्र लेखक द्वारा उपलब्ध कराए गए हैं)

संघ शासित प्रदेश लद्दाख में 2021 में कुल पर्यटकों की संख्या 304,077 तक पहुंच गई, जिनमें से 303,023 घरेलू पर्यटक और 1,054 विदेशी पर्यटक थे। यह भी देखने में आया है कि बहुत से सरकारी अधिकरी कर्मचारी एलटीसी की सुविधा लेकर लद्दाख और विशेषकर पैंगोंग झील देखने पहुंच रहे हैं। - सम्पादकीय टिप्पणी

दतिया (मध्य प्रदेश)

आस्था और विरासत का शहर

*मोहन सिंह

दतिया मध्य प्रदेश के ग्वालियर संभाग में एक प्राचीन शहर है, जिसका उल्लेख महाभारत में भी मिलता है। ब्रिटिश राज के समय से पहले यह एक रियासत था। दतिया शहर में धार्मिक स्थलों के अलावा भी कई पर्यटन स्थल हैं। जिले में भी घूमने फिरने के लिए बहुत कुछ है। पुराना शहर पत्थर की दीवार से घिरा हुआ है। राजा वीर सिंह देव द्वारा 1614 में निर्मित सात मंजिला महल के लिए प्रसिद्ध है। इसमें खूबसूरत महल और उद्यान हैं। यहां का विश्व प्रसिद्ध पीताम्बरा पीठ यानि बगलामुखी देवी मंदिर, धार्मिक भक्तों के लिए एक संपन्न तीर्थ स्थान भी है। यहां के रुचि के स्थान हम अपनी यात्रा की शुरूआत विश्व प्रसिद्ध पीताम्बरा पीठ से करते हैं।

पीताम्बरा पीठ :

दतिया शहर में प्रवेश करते ही एक भव्य मन्दिर दिखाई देता है और यही है, पीताम्बरा पीठ, जो देश की लोकप्रिय शक्तिपीठों में से एक मानी जाती है। पीताम्बरा पीठ के प्रांगण में ही 'मां बगलामुखी' और 'मां धूमावती' के मुख्य मन्दिर और महाभारत काल का शिव जी का बनखंडेस्वर मंदिर हैं।

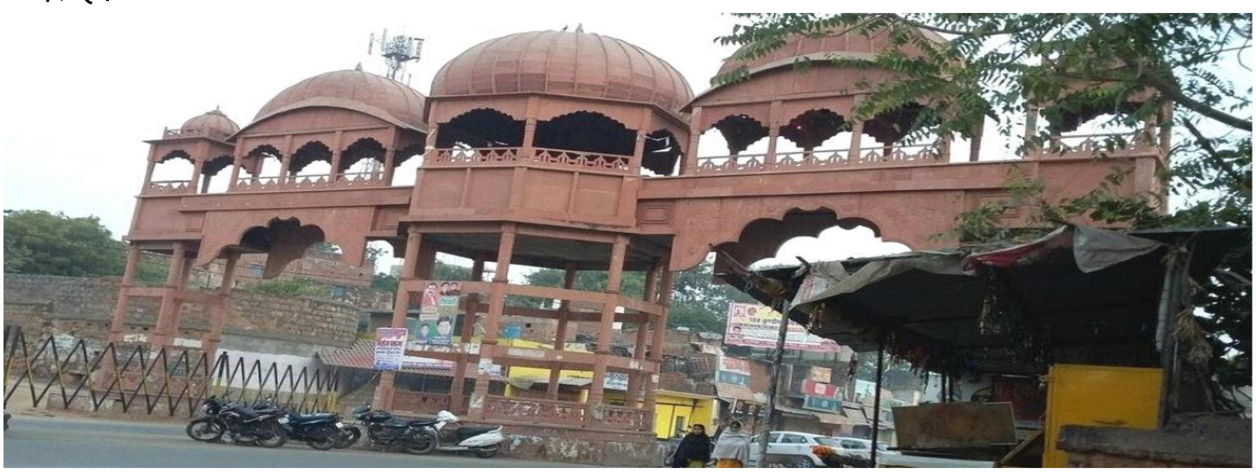

मंदिर परिसर :

वर्तमान में पीठ का रखरखाव एक ट्रस्ट द्वारा किया जाता है। आश्रम में 'तपस्थली' (ध्यान केन्द्र) है। श्री स्वामी जी द्वारा स्थापित एक संस्कृत पुस्तकालय है जिसमें आश्रम के इतिहास और विभिन्न प्रकार के साधनाओं और तंत्रों के गुप्त मंत्रों की व्याख्या करने वाली पुस्तकें

अनुरक्षित की गई हैं। आश्रम की एक अनूठी विशेषता है कि यहां संस्कृत भाषा का निशुल्क प्रचार किया जाता है। आश्रम के विद्यालय में प्रतिदिन बच्चों को संस्कृत पढ़ाई जाती है। आश्रम में वर्षों से संस्कृत वाद-विवाद कराया जाता रहा है। आजकल प्रति वर्ष संस्कृत दिवस पर एक बड़े कार्यक्रम का आयोजन भी किया जाता है।

इस सिद्धपीठ की स्थापना एक सिद्ध संत, जिन्हें लोग 'स्वामीजी महाराज' कहते थे, ने 1935 में दतिया के राजा शत्रुजीत सिंह बुन्देला के सहयोग से की थी। कोई नहीं जानता कि वह संत कहां से आए थे, उनका नाम क्या था? और उन्होंने भी इस बारे में कभी किसी को नहीं बताया। बस एक बात सबको पता थी कि श्री स्वामी महाराज परिव्राजकाचार्य दंडी स्वामी ब्रह्मचारी संत थे, जो अंतिम समय तक दतिया में ही रहे। कभी इस स्थान पर एक बड़ा शमशान हुआ करता था। आज यह चमत्कारी धाम स्वामीजी के जप और तप के कारण ही एक सिद्ध पीठ के रूप में जाना जाता है।

1962 में पीताम्बरा-पीठ के स्वामी जी का एक पुराना चित्र

प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उनके साथ जुड़े लोग अभी भी उन्हें आध्यात्मिकता का प्रतीक मानकर सम्मान करते हैं। उन्होंने मानवता और देश के हित और कल्याण के लिए कई अनुष्ठानों और साधनाओं का नेतृत्व किया। स्वामी जी प्रकांड विद्वान एवं लेखक थे। उन्होंने संस्कृत, हिन्दी में कई पुस्तकें भी लिखी थीं। इनमें से कई पुस्तकें मंदिर के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं ।

चमत्कारी धाम :

श्री स्वामी जी द्वारा स्थापित श्री पीताम्बरा पीठ, बगलामुखी माता के सबसे प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है। स्वामी जी ने आश्रम के इसी परिसर में ही 'बगलामुखी देवी' और 'धूमावती माई' की प्रतिमाएं स्थापित करवाई थी। धूमावती और बगलामुखी को दस महाविद्याओं में स्थान प्राप्त हैं। इसके अलावा, आश्रम के बड़े क्षेत्र में परशुराम, हनुमान, काल भैरव और अन्य देवी-देवताओं के मंदिर भी स्थापित किए गए हैं। इन्हे देखने देश के विभिन्न हिस्सों से श्रद्धालुओं और पर्यटकों का यहां आना-जाना लगा रहता है। कहा जाता है कि मां पीतांबरा देवी दिन में तीन बार अपना रुप बदलती हैं और मां के दर्शन से सभी भक्तों की मनोकामना पूरी होती है।

यहां मौजूद शिव वनखंडेश्वर मन्दिर का अपना एक विशेष स्थान है। मंदिर के प्रांगण में स्थित वनखंडेश्वर शिवलिंग को पुरातत्वविदों ने महाभारत काल का होने का प्रमाणित किया है।

मां पीताम्बरा की प्रतिमा :

भक्तों को मां के दर्शन एक छोटी सी खिड़की से ही होते हैं। मां पीताम्बरा बगलामुखी का स्वरूप रक्षात्मक माना जाता है। देवी मां की प्रतिमा के हाथों में मुग्दर, पाश, वज्र एवं शत्रुजिव्हा है। मान्यता है कि इनकी आराधना करने से साधक को विजय प्राप्त होती है। मुकदमे आदि में इनका अनुष्ठान सफलता प्राप्त करने वाला माना जाता है। यहां के विद्वान पंडित तो यहां तक कहते हैं कि जो राज्य आतंकवाद और नक्सलवाद जैसी हिंसा से प्रभावित हैं, वह मां पीताम्बरा की साधना व अनुष्ठान कराएं, तो उन्हें ऐसी समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है। लोगों का विश्वास है यहां मां के दरबार में किए गए हवन यज्ञ कभी असफल नहीं होते हैं।

धूमावती मन्दिर : पीताम्बरा पीठ के प्रांगण में ही मां भगवती धूमावती देवी का देश का एक मात्र मन्दिर है। ऐसा कहा जाता है कि मन्दिर परिसर में मां धूमावती की स्थापना करने के लिए अनेक विद्वानों ने स्वामी जी महाराज को मना किया था। तब स्वामी जी ने कहा कि मां का भयंकर रूप तो दुष्टों के लिए है, भक्तों के प्रति माता बहुत ही दयालु हैं। समूचे विश्व में धूमावती माता का यह एक ही मन्दिर है। जब मां पीताम्बरा पीठ में मां धूमावती की स्थापना हुई थी, उसी दिन स्वामी महाराज ने अपने ब्रह्मलीन होने की तैयारी शुरू कर दी थी। ठीक एक वर्ष बाद मां धूमावती की जयन्ती के दिन ही स्वामी महाराज ब्रह्मलीन हो गए।

मां धूमावती की आरती सुबह-शाम होती है। लेकिन भक्तों के लिए धूमावती का मन्दिर केवल शनिवार के दिन सुबह-शाम दो घंटे के लिए खुलता है। मां धूमावती को नमकीन पकवान, जैसे कि (विशेष रूप से मंगोडे) कचौड़ी और समोसे आदि का भोग लगाया जाता है।

एक तथ्य यह भी :

पीताम्बरा पीठ मन्दिर के साथ एक रोचक ऐतिहासिक सत्य भी जुड़ा हुआ है, जिसका श्री बी.के. नेहरू ने अपनी एक पुस्तक 'नाइस गाइज़ फिनिश सैकंड' में उल्लेख किया है। "भारत और चीन में युद्ध छिड़ा हुआ था। उस समय देश में आर्थिक संकट छा गया था और देश में परिस्थितियां विषम होती जा रही थीं। भारत के मित्र देशों ने भी मौन धारण कर लिया था। नेहरू जी बहुत परेशान थे। ऐसे में राष्ट्रपति कैनेडी को एक पत्र देने के लिए, मुझे दिल्ली बुलाया था और मैं अपनी माता जी, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू के साथ नेहरू जी से मिलने गया था। बात बात में माता जी ने नेहरू जी को दतिया में पीताम्बरा पीठ के स्वामी जी से मिलने की सलाह दी, मगर उन्होंने मना कर दिया। घर आने पर माता जी ने बताया कि मां के मंदिर में पूजा अर्चना और हवन यज्ञ कराने से हम पर आ रही विपदा का निराकरण हो सकता है। ऐसे कठिन हालात में बात आई गई हो गई।"

"मैनें अमेरीका जाकर राष्ट्रपति को पत्र दिया उसके कोई छः या सात दिन बाद ही हमें संयुक्त राष्ट्र संघ से संदेश मिला कि चीन ने युद्ध विराम घोषित कर दिया है। कुछ दिन बाद, भारत आने पर माता जी से चर्चा होने पर, उन्होंने हंस कर कहा कि सब माता रानी की कृपा है और उन्होंने मां पीतांबरा पीठ ले चलने को कहा। मैं उनकी बात कैसे टालता और अगली सुबह ही उन्हें साथ लेकर दतिया जाने का प्रोग्राम बनाया।"

"वहां मुझे पता लगा कि उस समय स्वामी महाराज ने सिद्ध पंडितों को बुलाया और राष्ट्रहित में एक 51 कुंडीय महायज्ञ प्रारंभ किया गया। यज्ञ के नौंवे दिन जब यज्ञ का समापन होने वाला था, चीन की सेना शान्त हो गई यानि लड़ाई रोक दी और 11वें दिन अंतिम आहुति के साथ ही चीन ने अपनी सेनाएं वापस बुला ली थीं। इस घटना के बाद से पीताम्बरा मंदिर में मेरी गहरी आस्था बढ़ गई। उसके पश्चात मैं विशेष आग्रह करके नेहरू जी को लेकर दतिया गया और हम स्वामी जी से मिले।"

"किसी से यह भी पता लगा कि सेना के दो अधिकारियों ने देश की रक्षा के लिए बाबा से गुहार लगाई थी। इसके लिए देश के मुखिया के तौर पर नेहरू जी को यजमान मानकर, मां बगलामुखी का 51 कुंडीय महायज्ञ किया गया था। वह दो अधिकारी कौन थे आज तक किसी को ज्ञात नहीं है। मन्दिर प्रांगण में उस समय यज्ञ के लिए बनाई गई यज्ञशाला आज भी देख सकते हैं।"

जब-जब देश के ऊपर विपत्तियां आती हैं तब-तब कोई न कोई देश भक्त गोपनीय रूप से मां बगलामुखी की साधना में यज्ञ-हवन अवश्य ही कराते हैं। मां पीतांबरा शक्ति की कृपा से देश पर

आने वाली बहुत सी विपत्तियां टल गई हैं। इसी प्रकार सन् 1965 और 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में भी यहां गुप्त रूप से साधनाएं एवं यज्ञ कराए गए थे। मां बगलामुखी ने देश की रक्षा की है। सन् 2000 में कारगिल में भारत-पाकिस्तान के बीच पुनः युद्ध हुआ, जिससे दुश्मनों को मुंह की खानी पड़ी। "कुछ लोग बताते हैं कि तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के कहने पर देश के कुछ गुप्त साधकों ने यहां मां बगलामुखी का यज्ञ कराया था।"

राजसत्ता का दरबार :
मां पीतांबरा को राजसत्ता प्राप्ति और शत्रु नाश की अधिष्ठात्री देवी माना गया है। इसी रूप में भक्त उनकी आराधना करते हैं। राजसत्ता की कामना रखने वाले भक्त यहां आकर गुप्त पूजा अर्चना करते हैं। शायद इसीलिए यहां देश के बड़े नेताओं का आवागमन होता है। राजसत्ता के इसी संदर्भ में भी मां पीतांबरा की पूजा का विशेष महत्व होता है।

कुछ दतिया के बारे में.....
यह पौराणिक और ऐतिहासिक महत्व का शहर है। दतिया का नाम क्षेत्र के पौराणिक राक्षस शासक वक्रदंत के नाम पर पड़ा है। राज्य की स्थापना 1549 में हुई थी। राव भगवान राव, दतिया के प्रथम राव और बरौनी (1626 - 1656) ने 1626 में अपने पिता ओरछा के राजा बीर सिंह देव से दतिया और बरौनी को प्राप्त कर, अपना राज्य स्थापित किया।

राजगढ़ महल और संग्रहालय :
राजगढ़ पैलेस भी प्रमुख पर्यटन स्थल है। इतिहास के अनुसार राजगढ़ महल का निर्माण नरेश शुभकरण, इंद्रजीत व शत्रुजीत सिंह के शासनकाल में हुआ था। 350 वर्ष पुराना यह महल आज भी अपनी सुंदरता और भव्यता के कारण पूरे देश विदेश के पर्यटकों को काफी लुभाता है।
बुंदेली भवन निर्माण शैली में बने इस महल में ही एक संग्रहालय भी है, जहां भौगोलिक और सांस्कृतिक महत्व की अनेक वस्तुओं का संग्रह रखा गया है। लेकिन आजकल इसकी नियमित रूप से देखरेख नहीं की जा रही है।

राजगढ़ महल

छतरियां :

शहर में करण सागर के पास राजसी छतरियां बनी हैं। दतिया के राजवंश परिवारों ने अपने पूर्वजों की स्मृति में इन छतरियों का निर्माण कराया था। इन्हें पवित्र शास्त्रों की कहानियों, मिथकों और किंवदंतियों के साथ विस्तृत स्मारकों से सजाया गया है, उनके स्मरणीय महान कार्यों का भी वर्णन है। छतरियों का एक विशाल संकुल, पर्यटकों की यात्रा को वास्तव में और रोचक बना देता है।

दतिया के तत्कालीन नरेश शुभकरण के शासन काल में इन छतरियों का निर्माण सत्रहवीं शताब्दी के अंत में बताया जाता है। करन सागर तालाब के किनारे स्थित चार सौ साल पुरानी छतरियों में भित्ति चित्रों के माध्यम से दतिया के इतिहास, रियासतकाल के वैभव, युद्धकला और परंपराओं आदि को दर्शाया गया है। राज्य पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा संरक्षित लेकिन इन छतरियों की सही देखभाल नहीं होती है। यहां पर पर्यटन विभाग द्वारा एक चौकीदार नियुक्त किया गया है।

वीर सिंह पैलेस या सतखंडा महल:

सतखंडा महल के नाम से प्रसिद्ध दतिया का वीर सिंह पैलेस पर्यटकों के लिए हमेशा ही आकर्षण का केंद्र रहा है। शहर के पश्चिमी किनारे पर एक अलग चट्टान पर स्थित यह ऐतिहासिक महल इतिहास में हुए अनेक परिवर्तनों का साक्षी रहा है। तत्कालीन महाराजा वीर सिंह जूदेव ने 1614 में इस इमारत को केवल पत्थरों और ईटों का इस्तेमाल कर बनाया गया है। प्राचीन कला के वास्तुकारों के अनुसार, इसे बनाने में सीमेंट का उपयोग नहीं किया गया है बल्कि दाल, गुड़ और तेल के प्राचीन मिश्रण से इस किले का निर्माण किया गया था।

गोविन्द महल

इसे देश में बुंदेली वास्तुकला का एक बेहतरीन उदाहरण माना जाता है और बेहतरीन इमारतों में इसकी गणना की जाती है। महल में आकर्षक भितिचित्र बने हुए हैं। महल में कुछ सुंदर मूर्तियां भी स्थापित की गई हैं और महल के ऊपरी मंजिल से आसपास के क्षेत्र का सुंदर नजारा देखा जा सकता है। आज इस इमारत में कई जगह पर दरारें आ चुकी हैं। हालांकि कुछ साल पहले इसकी मरम्मत का कार्य किया गया था, लेकिन यह भी पूरा नहीं हो सका है।

सोनागिरि :

शहर से लगभग 15 कि.मी. पर सोनागिरि की पहाड़ी पर, प्रसिद्ध जैन तीर्थ मुख्य है। जैन संस्कृति के प्रतीक इस तीर्थ स्थल को प्रकृति ने अपनी भरपूर छटा से संवारा, इतिहास ने स्तुत्य गौरव प्रदान किया और अध्यात्म ने इसे तपोभूमि बनाकर निर्वाण का सिद्ध क्षेत्र बनाया है। यह तीर्थ ऊंची पहाड़ियों पर स्थित हैं और इसके आस-पास अनेक प्रकार के औषधीय पेड़ पौधों के साथ पहाड़ी पर बड़ी संख्या में बादाम के पेड़ भी लगाए गए हैं। इन खूबसूरत मंदिरों में पूजा अर्चना करने के लिए प्रति वर्ष बड़ी संख्या में जैन धर्मावलम्बी भक्तगण आते हैं। इनके अलावा इन मंदिरों के दर्शन हेतु अन्य धर्मावलम्बी पर्यटक भी आते हैं। सोनगिरि पहाड़ी पर 61 जैन मंदिर है। सबसे ऊपर की पहाड़ी पर 59 नंबर का मंदिर मुख्य है।

हम भी इस प्रसिद्ध जैन तीर्थ स्थल के दर्शन करने पहुंचे और चढ़ाने के लिए प्रशाद लिया तो देख कर अटपटा सा लगा, एक सूखा नारियल और सूखे चावल साथ में पांच सात फूल। अप्रैल की गर्मी से आसपास का सारा माहौल बहुत ही गर्म था। यहां ऊपर जाने वाली सीढ़ियां सीमेंट से पक्की बनाई गई हैं और एकदम खुली भी हैं। इसलिए तेज धूप के कारण वह भी तप रहीं थीं। इतनी तेज धूप में मेरे लिए सीढ़ियों पर नंगे पांव चलना दूभर हो रहा था। कई दिनों से पैरों में भी बहुत दर्द हो रहा था, जैसे तैसे चल ही रहा था।

कोरोना के कारण सभी मंदिरों पर ताले लगे हुए थे। केवल बाहर जाली में से ही दर्शन कर सकते थे। यहां के दो मंदिरों पर अपने क्षेत्र के पुराने परिचित लोगों के नाम और पते देख कर मन कुछ उत्साहित भी हुआ और सोचने लगा कि इन लोगों ने कभी बताया ही नहीं।

पसीने से तर जैसे तैसे चल रहा था, कहीं बैठने की भी व्यवस्था नहीं थी। एक स्थान पर छाेटे दोटपेड़ के नीचे बैठने लगा कि एक बूढी अम्मा ने, जो ऊपर से वापस आ रही थी, कहा 'थोड़ा सा कष्ट करो और 36 वें मंदिर तक पहुंच जाओ, फिर देखना।' बस बैठने की बजाय फिर चलने लगा और जैसे तैसे 36 वें मंदिर के पास आते ही, ठंडी हवा की लहरों ने तरोताजा कर दिया और सच में न जाने कौन सा चमत्कार हुआ कि पैरों का दर्द धीरे धीरे कम होने लगा। एक नई स्फूर्ति सी आ गई और चढ़ते ही चले गए। बस फिर क्या था ? शिलाओं को पार करते हुए 40 से 58 मंदिर देखते हुए, आराम से 59वें मंदिर में आ पहुंचे।

वहां बैठे पुजारी जी ने बताया कि अपने साथ लाए प्रशाद में से नारियल और फूल भगवान के सामने रख दें और अन्य मूर्तियों के सामने (जाली लगे पात्रों में) थोड़ा - थोड़ा चावल अर्पित कर दें।

अब पुजारी जी से चर्चा करने बैठे (इस एकांत में शायद वह भी बात करना चाहते थे) तो उन्होंने एक सेवक से पानी मंगवाया। पीपल के पेड़ के नीचे बने थड़े पर रखे मटके का, इतना ठंडा पानी, पीकर जैसे थकान दूर होने लगी। उन्होंने बताया कि यह चावल के दाने पक्षियों के लिए रख दिए जाते हैं। फिर भी जो बच जाएं उन्हें पेड़ पौधों के नीचे डाल देते हैं।

अंत में नीचे आने पर मुख्य द्वार से पहले प्रशाद लिया तो और भी आश्चर्य हुआ, घर ले जाने वाले प्रशाद में सफेद रंग की मीठी भुजिया और उसमें कुछ बादाम थे। ज्ञात हुआ कि यह भुजिया पनीर से बनी है। कार्यालय के बाहर विश्राम स्थल पर कुछ देर बैठे, एक सज्जन ने बताया कि आश्रम में 50 से अधिक गायें हैं, जिनका दूध बेचा नहीं जाता और आश्रम तथा मंदिर के लिए ही उपयोग किया जाता है। उसी पनीर से यह प्रशाद बनाया जाता है।

चर्चा करते समय उन्होंने बताया कि सोनागिरि जैसे अनोखे इस स्थान को 'छोटा सम्मेद शिखर जी' भी कहते है। पुरातत्वविदों ने सचित्र प्रमाणों के आधार पर इस क्षेत्र को ईसा पूर्व की तीसरी शताब्दी का सिद्ध किया है। इसका प्राचीन नाम 'श्रमणगिरि' और 'श्रमणांचल' रहा था, कालांतर में यह 'स्वर्णगिरि' हो गया। आजकल लोग सोनगिरी या सोनागिरी नाम ही जानते हैं। वर्तमान में यह मन्दिर 'श्री दिगंबर जैन स्वर्ण मन्दिर' के नाम से अधिक लोकप्रिय है, इसका मुख्य कारण

इस मन्दिर के विभिन्न कक्षों की आंतरिक दीवारों पर विविध रंगों से सुन्दर, मनोहारी एवं नयनाभिराम चित्रकारी जिनमें स्वर्ण रंग की अधिकता है, इसी कारण इसे स्वर्ण मन्दिर भी कहा जाता है।

मन्दिर जी में बहुरंगीय अलंकरण अभिप्रायों तथा विविध आकार वाले माणिकों, दर्पणों एवं बहुत बारीक स्वर्ण कलाकृतियों से एवं जैन धर्म से सम्बंधित विविध कथानको एवं तीर्थ क्षेत्रों को संपूर्णता में प्रस्तुत करने के सुन्दर प्रयास सहित एक सुशोभित विशाल बरामदा है। इसे स्वाध्याय कक्ष या सरस्वती कक्ष अथवा सभामंडप भी कहा जाता है । मन्दिर के विशाल बरामदे में चारों ओर बलुए पाषाण से बने स्तंभों एवं दीवारों फूल-पत्तियों की सुन्दर नक्काशी की गई है। वातावरण इतना रमणीक है कि यहां पहुंचने वाला प्रत्येक जन भाव-विभोर हो जाता है।

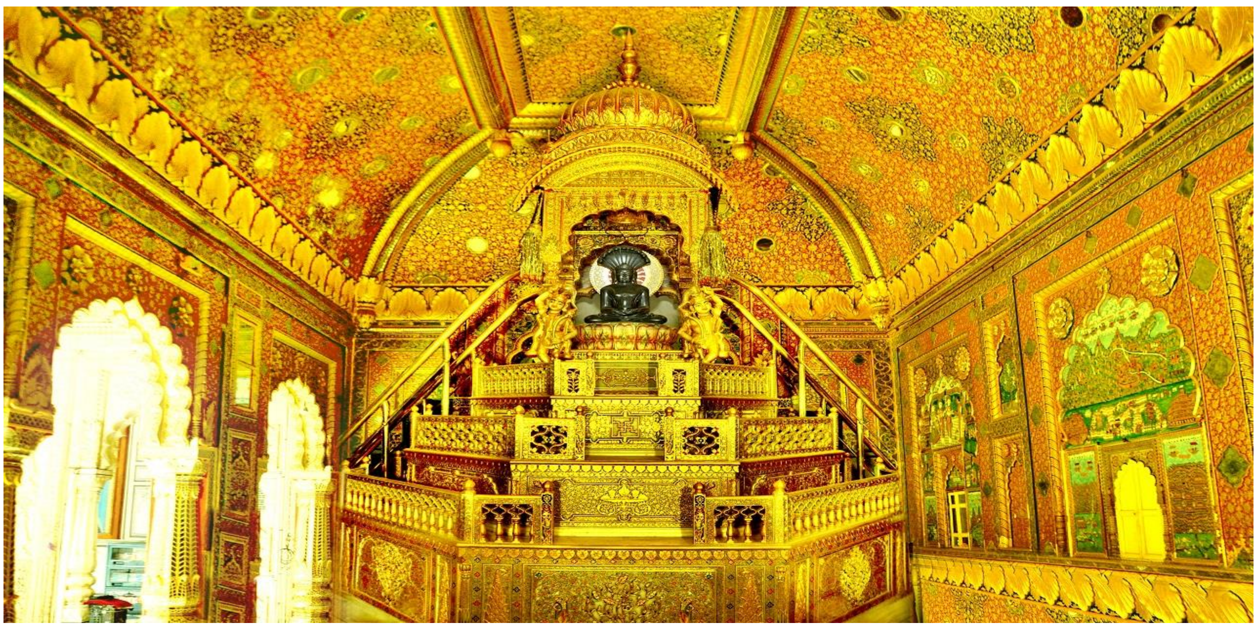

मंदिर खुलने का समय :

मंदिर के खुलने का समय सुबह चार बजे है। सुबह से ही सभी जैन मुनि अपनी साधना में लीन हो जाते है और देर रात तक यह साधना चलती रहती है। यहां आने वाले व्यक्तियों को किसी भी प्रकार का कोई शोर करने तथा जैन मुनियों की फोटो लेने की अनुमति नहीं दी जाती है।

आयोजित पर्व :

यहां स्वामी महावीर जी की जयंती बहुत ही धूम धाम से मनाई जाती है। इस दिन यहां होने वाली रथ यात्रा को देखने के लिए बहुत से लोग आते है। महावीर जयंती के दिन दिगंबर जैन एवं श्वेतांबर जैन के जैन मुनि 24 जैन तीर्थंकरों की रथ यात्रा में शामिल होकर इस यात्रा को और भी भव्य बनाते है। इसी कारण इस दिन यहां दूर दूर से लोग इस खूबसूरत यात्रा को देखने के लिए आते हैं।

कहां ठहरें :
यदि आप सोनगिरी में एक दो दिन रुकना चाहते है तो यहां एक सुथत व्यवस्िधर्मशाला है। इसके अलावा शहर में कई होटल तथा जैन समाज की कई धर्मशालाएं स्थित हैं, जिनमें आपको सभी प्रकार की सुविधा प्रदान की जाती है। सोनागीर दतिया से सड़क और रेल मार्ग से जुड़ा हुआ है।

उनाओ का सूर्य मंदिर :
दतिया शहर से लगभग 22 कि.मी. दूर, उनाओ का सूर्य मंदिर अपनी खूबसूरती के लिए मध्यप्रदेश में प्रसिद्ध है। यह एक प्राचीन मन्दिर है और कहा जाता है कि यह प्रागैतिहासिक काल से मौजूद है। सूर्य मंदिर को दूसरे राज्यों से भी लोग तीर्थयात्रा की तरह स्वीकार करते हैं। इस स्थान को "बालाजी धाम" के नाम से भी जाना जाता है।

मंदिर के ठीक सामने की तरफ पहुज नामक नदी है। इसकी एक धारा मंदिर के प्रवेश द्वार की ओर आकर, एक तालाब का रूप ले लेती है। मान्यता है कि इसके पवित्र जल में स्नान करने से कुष्ठ रोगी ठीक हो जाते हैं। बाहर से आने वाले तीर्थयात्री, मंदिर में प्रवेश करने से पहले यहां एक डुबकी लगा कर, इसी जल से सूर्यदेव का जलाभिषेक करते हैं।

नदी की ओर जाने के लिए 40 सीढ़ियां

उनाओ बालाजी सूर्य मंदिर अपने साथ कई किवदंतियां समेटे हुए है। कहा जाता है कि काछी समाज के एक व्यक्ति के पास एक बहुत अद्भूत प्यारी गाय थी। वह गाय प्रतिदिन गांव से निकल कर एक पहाड़ी तक जाकर वापस आ जाती थी। काछी ने कभी इस पर ध्यान नहीं दिया था। एक दिन गाय वापस नहीं आई, वह उसे ढूंढने निकला। इस क्षेत्र में पहले ऐसे लोग रहते थे जो गायों को मार कर खाल आदि बेचने का काम करते थे। दो दिन बाद भी जब गाय नहीं मिली तो गाय के मालिक को बहुत दुख हुआ और उसने सोचा कि उन लोगों ने गाय को मार दिया है। तब एक बालक ने बताया कि एक दिन वह उसके पीछे गया था और देखा कि गाय ने एक पत्थर पर दूध की धार छोड़ी और वापस आ गई।
उसी दिन, उनाओ से दस मील दूर पर दतिया के राजा नरेश राव को दोपहर में आराम करते हुए इस घटना का सपना आया। उस सपने में एक साधु बाबा ने उन्हें गाय का उचित क्रियाक्रम करने को कहा। राजा बहुत दुखी मन से वहां पहुंचे और गाय की अस्थियां खोजने के प्रयास में, वहां पड़े सफेद पत्थर के आसपास खुदाई शुरू की गई। खुदाई के दौरान उस स्थान से सूर्य देवता

की एक सुन्दर मूर्ति प्राप्त हुई। राजा ने उस स्थान पर एक भव्य मंदिर का निर्माण करवाया, वही मंदिर आज बालाजी मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है। राजा के द्वारा इस मंदिर की देखरेख व पूजा अर्चना का दायित्व गाय के मालिक को ही दे दिया गया। यह भारत का एक मात्र मंदिर है, जिसमें मंदिर के रख रखाव व पूजा आदि की व्यवस्था काछी समाज के व्यक्तियों द्वारा ही जा रही है।

मंदिर परिसर :

सुरभ्य पहाड़ी पर स्थित होने के कारण सूर्योदय की पहली किरण सीधे मंदिर के गर्भगृह में स्थित सूर्य की मूर्ति पर पड़ती है। सूर्य देव की प्रतिमा काली ईंटो के समतल मंच पर ढकी हुई स्थापित है और उसमें केवल उनका मुख ही दिखाई देता है। इस प्रतिमा में 21 त्रिभुज सूर्य के 21 चरणों को प्रदर्शित करते है। कहा जाता है कि यह मंदिर भारत का एक अकेला ऐसा मंदिर है जहां पर सूर्य-यंत्र स्थापित किया गया है। यहां प्रत्येक रविवार को विशेष अर्चना- आराधना के लिए मेला लगता है। सूर्य देवता के दर्शन के लिए दूर दूर से बड़ी संख्या में भक्त आते है। यहां प्रत्येक आषाढ़ शुल्क एकादशी को रथयात्रा का आयोजन किया जाता है। मंदिर परिसर में सूर्य देवता के अलावा भी कई छोटे मंदिर है, पर सूर्य देव का मंदिर ही प्रमुख है।

घी के कुएं :

इस मंदिर का निर्माण 16 वीं शताब्दी में कराया गया था और तब से ही यहां पर एक अखण्ड ज्योति आज भी निरंतर प्रज्वलित है। ऐसा माना जाता है कि यह ज्योति लगभग 400 वर्षों से लगातार जल रही है। इस अखंड ज्योति को प्रज्वलित रखने के लिए प्रतिदिन आठ किलो शुद्ध (देसी) घी लग जाता है। भक्तगण इस ज्योति को प्रज्वलित रखने के लिए घी अर्पित करते हैं। मंदिर समिति के अनुसार भक्तों के द्वारा प्रतिदिन लगभग 12 किलो घी चढ़ावे में आता है। रविवार को इसकी मात्रा बढ़ जाती है। इस प्रकार उपयोग के बाद भी प्रतिदिन घी शेष रह जाता है और इस शेष घी को एकत्रित कर लिया जाता है।

विगत कई दशकों से आने वाले श्रद्धालु भक्तों के द्वारा यहां इतना घी चढ़ाया गया है कि घी को रखने हेतु कुओं का निर्माण करवाना पड़ा और वह भी एक या दो नहीं बल्कि पूरे नौ।

यहां मकर संक्रांति, बंसत पंचमी, रंग पंचमी और डोल ग्यारस के अवसरों पर चढ़ावे में क्विंटल तक शुद्ध घी आ जाता है। मंदिर के पुजारी रामाधार ने हमें बताया कि मान्यता हैं कि घी के चढ़ावे में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी करने पर शाप लगता है और कुष्ठ और चर्म रोग आदि बीमारियां हो सकती हैं। अतः मंदिर में चढ़ाए गए घी में किसी प्रकार की गड़बड़ी नहीं होती। इस घी को इकट्ठा करने के लिए पहले एक कुआं बनवाया गया, जब वह भर गया दूसरा और इस तरह धीरे धीरे पूरे नौ कुएं भर गए हैं।

मंदिर पहुंचने का साधन : दतिया से सरकारी बस या ऑटो से उनाओ जा सकते है। यहां मध्य

प्रदेश के साथ साथ उत्तर प्रदेश के श्रृद्धालुओं, पर्यटकों और विशिष्ट व्यक्तियों का भी आगमन होता है। लेकिन ठहरने का कोई प्रबंध नहीं है। बावजूद इसके सूर्य मंदिर पर सुविधाओं के विस्तार के संबंध में प्रशासन द्वारा कोई कारगर पहल नहीं की जा सकी है। नतीजतन यहां दर्शनार्थ आने वाले यात्रियों को शाम से पहले ही वापसी करनी होती है।

रतनगढ़ माता मंदिर : दतिया शहर से 55 कि.मी. दूर, घने जंगल मे (रामपुरा गांव से पांच कि.मी. दूर) 'सिंध' नदी के किनारे पर स्थित है, रतनगढ़ माता मंदिर। अभिलेखों से ज्ञात होता है कि इस पवित्र स्थान पर मंदिर के निर्माण में छत्रपति शिवाजी महाराज का भी योगदान रहा है। उन्होंने इस मंदिर के निर्माण के लिए एक हजार स्वर्ण मुद्राएं भेजी थी। रतनगढ़ माता मंदिर को देश का सबसे वजनी पीतल का घंटा लगा होने का गौरव प्राप्त है। इस घंटे का वजन 1935 किलोग्राम है, जिसे ग्वालियर के मूर्तिकार प्रभात राय ने बनाया था। इस घंटे को रस्से की मदद से बजाया जाता है। हर वर्ष दिवाली और भाई दूज पर लाखों की संख्या मे भक्तगण माता और कुंवर महाराज के दर्शन कर आशीर्वाद लेने आते हैं। सिंध नदी पर बने पुल को पार करके मंदिर तक पहुंचा जा सकता है।

संकुआं धाम :

दतिया शहर से 60 कि.मी. की दूरी पर है सेवढ़ा, जो दतिया की एक बेहद ही खुबसूरत जगह है। सेवढ़ा का दूसरा नाम संकुआ धाम है। यह पहले कन्हरगढ़ हुआ करता था, वर्तमान में इस जगह का नाम सेवढा है और अब इसे संकुआ धाम के नाम से भी जाना जाता है। कहा जाता है कि इसी संकुआं धाम पर सिंध नदी के किनारे ब्रहमा जी के चार पुत्रों (ऋषि सनक, सनन्द, सनातन, सनत) ने तपस्या की थी। इस धाम की एक और मान्यता यह भी है कि इसे सभी तीर्थों का

भानजा कहा जाता है, अत: इस घाट पर स्नान की अपनी एक अगल महत्ता है।

सेवढ़ा में एक खूबसूरत कन्हारगढ़ दुर्ग, माता माडुला देवी का मंदिर, सुन्दर झरने की तरह सिंध नदी के किनारे और प्राकृतिक शांत वातावरण पर्यटकों को यहां आने के लिए आकर्षित करता है। कार्तिक मास में एक माह लगने वाला मेला श्रद्धालुओं के साथ ही अन्य पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र रहता है। यहां पर प्रकृति के कई ऐसे नजारे हैं जो इतिहास के पन्नों पर आज भी अमर है। वहीं सेंवढ़ा में संकुआ धाम के अलावा अलीखेरे के हनुमान, जिंदपीर, शीतला माता, हरदौल बाग, बारहद्वारी, सनकेश्वर घाट पर गौमुख, शुक्राचार्य मठ, बलखण्डेश्वर मंदिर, बालाजी मंदिर, गूदड़ीया मठ, रामहोराम की बगिया, सेवढ़ा के निकट जंगल में रतनगढ़ माता का सिद्ध मंदिर, देवगढ़ का किला, आमखो, आदि ऐतिहासिक महत्व के दर्शनीय स्थल है।

संकुआ घाट

कैसे पहुंचें

हवाई मार्ग : दतिया के लिए निकटतम हवाई अड्डा ग्वालियर एयरपोर्ट है, जो यहां से लगभग 70 कि.मी. की दूरी पर है।

रेल मार्ग : नियमित ट्रेनों के माध्यम से दतिया देश के अन्य प्रमुख शहरों से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। यहां दतिया और सोनागिरि दो रेलवे स्टेशन हैं।

सड़क मार्ग : राष्ट्रीय राजमार्ग-46 के के माध्यम से दतिया देश तथा मध्य प्रदेश के प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है।

*संप्रति: 'अतुल्य भारत' पत्रिका के पूर्व प्रबंध सम्पादक

झारखंड

पर्यटन के अज्ञात गंतव्य : सिमडेगा : राम रेखा धाम

*कैप्टन प्राण रंजन

शहर की भागदौड़ भरी जिंदगी से दूर, सिमडेगा झारखंड राज्य का एक ऐसा शानदार पर्यटन स्थल है जो धार्मिक स्थलों के निमित्त लोकप्रिय होने के साथ ही अपने नदी बांध और वन्यजीव अभयारण्य के लिए भी जाना जाता है। फिर भी अधिकांश भारतीय सैलानी इसकी खूबसूरती से अब तक अंजान है। भरपूर हरियाली के साथ सुखद जलवायु और साथ ही प्राकृतिक सुंदरता लिए यहां के परिदृश्य, देश और परदेश के दोनों पर्यटकों को आकर्षित कर सकते हैं। पहाड़ियों से घिरा सिमडेगा कई पर्या-पर्यटन स्थलों, पौराणिक और ऐतिहासिक विरासतों को अपने में समाएं हुए है और यह पर्यटकों को बहुत आकर्षित करता रहा है। अन्य के साथ साथ, रामरेखा धाम इस क्षेत्र का सबसे महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है। सिमडेगा में पर्यटन के विकास की अपार संभावनाओं को देखते हुए, सरकार द्वारा इस क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से काफी काम किया गया है।

अपने वृहद इतिहास और पर्यटन आकर्षणों के साथ यह एक समृद्ध शहर है, अगर आप सप्ताह भर के अवकाश के लिए झारखंड के किसी खास गंतव्य की खोज में हैं, तो आप सिमडेगा की सैर पर आ सकते हैं। यह एक ऐसा स्थान है, जहां आप सुकून भरा समय अपने परिवार या दोस्तों के साथ बिता सकते हैं। आइए जानते हैं कि यह स्थान अपने पर्यटन आकर्षणों के साथ आपको किस प्रकार आनंदित कर सकता है।

सिमडेगा के बारे में....

समुद्र तल से करीब 1312 फीट ऊंचाई पर अवस्थित सिमडेगा झारखण्ड राज्य का एक दूरस्थ शहर और सिमडेगा नामक जिले तथा उपखंड का प्रशासनिक मुख्यालय है। इसके इतिहास को देखने पर पता चलता है कि सिमडेगा पूर्व में कैसालपुर-बिरूगढ़ परगना नाम का राज्य था। यह क्षेत्र कई शक्तिशाली राजवंशों के अधीन रह चुका है। यहां काफी समय तक मौर्य साम्राज्य का शासन रहा था और उसके बाद यहां गजपति जैसे राजवंशों ने भी शासन किया था, जिस पर कलिंग क्षेत्र (वर्तमान ओडिशा) के पूर्वी गंगा वंश के बाद कपिलेन्द्र (1435-1467 ई.) ने गजपति साम्राज्य सूर्यवंशी गजपति वंश की स्थापना की थी। इस क्षेत्र पर गजपति वंशीय राजाओं ने सदियों तक शासन किया था। इतना ही नहीं, ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के दौरान भी यहां गजपति राजाओं का ही शासन था। गजपति परिवार के वंशज अभी भी राष्ट्रीय राजमार्ग - 23

पर सिमडेगा शहर से लगभग 11 कि.मी. की दूरी पर स्थित बीरू या बीरूगढ़ में रहते हैं। खूबसूरत पठार के इस क्षेत्र में आदिवासी और उड़िया समुदाय रहते हैं।

मार्च, 1912 में बंगाल प्रेजीडेंसी से अलग करके बिहार और उड़ीसा प्रांत बनाए गए थे। कालांतर में, 15 नवंबर 2000 को बिहार से अलग कर आज के झारखंड की स्थापना की गई।
संयोग से ब्रिटिश समय में, 1845 से ही मिशनरियों के लिए एक लोकप्रिय कार्यक्षेत्र रहा है। तत्कालीन गजपति राजाओं द्वारा दान में दी गई भूमि पर स्कूलों, मठों, अस्पतालों और *पैरिशों की स्थापना की थी। विशेष रूप से सोसाइटी ऑफ जीसस ने इस क्षेत्र में कई ईसाई स्कूलों की स्थापना करके शिक्षा के प्रसार में मदद की है। (*तकनीकी रूप से पैरिश को एक स्थानीय चर्च समुदाय भी कहते हैं, जिसमें एक मुख्य चर्च और एक पादरी होता है।)

राम रेखा धाम :

सिमडेगा भ्रमण के दौरान हम यहां के धार्मिक स्थलों में महत्वपूर्ण राम रेखा धाम की चर्चा करते हैं। शहर मुख्यालय से लगभग 26 कि.मी. दूर रामरेखा धाम को एक धार्मिक एवं पवित्र स्थान माना जाता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस स्थान पर भगवान राम, लक्ष्मण और माता सीता का आगमन हुआ था।

इस स्थल के बारे में लोगों का मानना है कि 14 वर्ष के वनवास की अवधि के दौरान मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने इस मार्ग का अनुसरण किया था। स्वयं भगवान श्री राम, माता सीता और लक्ष्मण इस स्थान पर आए थे और उन्होंने यहां कुछ समय बिताया था। इसलिए यह स्थल हिन्दू धर्म के लोगों में काफी महत्व रखता है। विशेष धार्मिक अवसरों पर यहां भव्य कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

प्राकृतिक सौंदर्य से भी परिपूर्ण, रामरेखा धाम श्रद्धा और आस्था का प्रतीक है। यह मंदिर एक झुकी हुई गुफा में स्थित है। यहां आने वाले भक्तों की मान्यता है कि बड़ी-बड़ी शिलाओं से ढकी गुफा के अंदर छत में खींची गई रेखाएं स्वयं प्रभु श्रीराम ने खींची थी। इसी कारण से पावन धर्मस्थली का नाम 'राम रेखा धाम' पड़ा है। इसी पावन स्थल पर तपस्वी अग्निजिह्वा का भी आश्रम था।

धार्मिक दृष्टिकोण से यह धाम एक महत्वपूर्ण स्थान है, जहां दर्शन के लिए हजारों की तादाद में श्रद्धालुओं का आगमन होता है। कुछ बुजुर्गों का मानना है कि 'राम रेखा धाम' के दर्शन का सौभाग्य किसी किसी को ही प्राप्त होता है। (संभवत: वे लोग काफी पहले की बात करते होंगे जब घने जंगलों के कारण यहां आने के साधन नहीं के बराबर ही थे)। लेकिन आज विभिन्न राज्यों और कई समुदायों के लोग यहां आते हैं और अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं।

भगवान राम ने इन गुफाओं में खींची थी रेखाएं तब ही नाम पड़ा रामरेखा।

पौराणिक प्रतीक :

रामरेखा धाम में आज भी ऐसे कई पौराणिक प्रमाण मौजूद हैं, जिससे यहां के पुरातात्विक अवशेषों तथा संरचनाओं का पता चलता है। यहां पर अग्नि कुंड, सीता चूल्हा, गुप्त गंगा और भगवान श्रीराम की चरण पादुका आज भी देखे जा सकते हैं। रामरेखा धाम परिसर में श्रीराम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान के अलावा भगवान शंकर की सुन्दर प्रतिमाएं भी स्थापित की गई हैं।

कार्तिक पूर्णिमा पर मेला :

वैसे तो यहां पूजा अर्चना के लिए प्रतिदिन श्रद्धालु भक्तों का आवागमन होता है। लेकिन कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर यहां बड़ा उत्सव मनाया जाता है और इस समय लगाए गए मेले में यहां हजारों की संख्या में श्रद्धालु तीर्थयात्रियों के साथ अन्य पर्यटक भी आते हैं। झारखंड के अलावा भी यहां बंगाल, ओडिशा, छत्तीसगढ़, बिहार और मध्य प्रदेश जैसे कई दूसरे राज्यों से भी भक्तगण हाजिरी देने आते हैं। हालांकि, हिंदु धर्मावलम्बियों में रामरेखा धाम को लेकर आस्था देखी जाती है, लेकिन कार्तिक मेले के अवसर पर अन्य समुदायों के लोगों को भी यहां

देखा जा सकता हैं, जो यहां आकर अपने परिवार के लिए सुखी जीवन की मंगल कामना करते हैं। यहां के आसपास के ग्रामीणों का कहना है कि वह पूरे साल इस मेले का इंतजार करते हैं क्योंकि इससे उनकी भी अच्छी कमाई हो जाती है। जब कभी सिमडेगा की ओर आना हो, तो रामरेखा धाम की पहाडियों की सैर करना न भूलें।

प्रकृति के बीच स्थित धार्मिक स्थलों के भी बदले दिन :

सिमडेगा में बड़ी संख्या में मुख्य रूप से विभिन्न आदिवासी समुदाय रहते हैं। हालांकि, अब सिमडेगा धीरे-धीरे एक आधुनिक नगर के रूप में विकसित हो रहा है, फिर भी यहां की प्राकृतिक संपदा अभी तक प्रभावित नहीं हुई है। देश विदेश के पर्यटक सिमडेगा के घने जंगलों की खूबसूरती का आनंद लेने और इन आदिवासियों के रहन-सहन की जीवनशैली को निकट से देखने के लिए यहां आते हैं। अब निजी टूर ऑपरेटरों द्वारा प्रशासन की अनुमति से यहां के जंगलों में पर्यटक कैंप लगाना और दूसरे कार्यक्रम करना सामान्य बात है।

जिला पर्यटन संर्वधन समिति द्वारा वर्षों से उपेक्षित सिमडेगा के पर्यटन स्थलों को पिछले दो-तीन वर्षों से संवारने का कार्य किया जा रहा है। वैसे तो जिले के इन पर्यटक स्थलों पर पर्यटकों का आवागमन लगा ही रहता है, लेकिन अब उनकी पहचान करते हुए विकास के कार्य किए जा रहे हैं। इस कार्य में स्थानीय लोगों की भूमिका तय की गई, जिसे यहां के लोगों ने भी सहर्ष स्वीकार किया है। इससे जिला प्रशासन को सहूलियत हुई और पर्यटन स्थलों के सौंदर्यीकरण में लोगों को अप्रत्यक्ष रोजगार भी मिला है।

यहां की मनोरम प्राकृतिक छटा पर्यटकों का मन मोहती रही है। प्रशासन का प्रयास है कि जिले में स्थित पर्यटक स्थलों को नया स्वरूप देकर ना सिर्फ पर्यटकों को इनकी ओर बरबस आकर्षित किया जाए, बल्कि इसके माध्यम से स्थानीय लोगों की आजीविका भी सुनिश्चित की जा सके। इन पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों के लिए मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं, जिससे पर्यटकों की संख्या में निरंतर वृद्धि दर्ज की गई है।

केलाघाघ, दानगद्दी जैसे पर्या-पर्यटन (ईको टूरिज्म) स्थलों के साथ ही रामरेखा धाम, बनदुर्गा, केटुंगा धाम जैसी पौराणिक विरासतों को संवारने के साथ ही अन्य पर्यटन स्थलों का भी बड़े पैमाने पर विकास किया जा रहा है। चिन्हित पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों एवं श्रद्धालुओं को अब तक खल रही (जो उनके लिए उपलब्ध होनी चाहिए थी) सुविधाओं को और विकसित किया गया है। यह कार्य जारी है। कई पर्यटक स्थलों को विकसित किया गया है। अन्य स्थलों के विकास कार्य अंतिम चरण में हैं। पर्यटन स्थल विकसित होने से लोगों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार से जोड़ने के प्रयास भी किए जा रहे हैं।

सिमडेगा में पर्या-पर्यटन के अन्य स्थल

पलकोट वन्यजीव अभयारण्य :

1990 में स्थापित किया गया यह अभयारण्य झारखंड के दो जिलों, सिमडेगा और गुमला के लगभग 184 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र को कवर करता है। इसमें शुष्क पर्णपाती अर्थात पतझड़ी वन हैं। यह हाथियों, तेंदुए, भालू, सियार, बंदर, साही, खरगोश आदि को सुरक्षित आश्रय प्रदान करता है। पलकोट वन्यजीव अभयारण्य अपनी खास जैव विविधता के लिए प्रसिद्ध माना जाता है।

सिमडेगा भ्रमण की शुरुआत यहां के खूबसूरत प्राकृतिक स्थल, पलकोट वन्यजीव अभयारण्य से की जा सकती हैं। यहां विभिन्न वनस्पतियों, जीव और पक्षियों की प्रजातियों को देख सकते हैं। इस अभयारण्य में वनस्पतियों में औषधीय पौधों के अलावा, साल, आंवला, कुसुम और आम के पेड़ आदि ज्यादा देखने को मिलेंगे। यहां पर्यटकों को जंगली जानवरों की दुर्लभ प्रजातियों तथा वनस्पतियों आदि के बारे में सूचना देने के लिए सूचना केन्द्र भी बनाए जाने का प्रावधान रखा गया है। इसके अलावा आप यहां पक्षी विहार का भी आनंद ले सकते हैं।

अर्जुन डोहा :

पलकोट वन्यजीव अभयारण्य के अलावा, इससे थोड़ी दूरी पर ही अर्जुन डोहा नामक एक शानदार पर्यटन स्थल है। घने जंगलों से घिरा यह स्थान भी प्रकृति के आकर्षक रूप प्रस्तुत करता है। यहां से होकर गुजरती छिंदा नदी इस स्थान को खास बनाती है। जिला प्रशासन ने यहां पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए इसे एक पिकनिक स्पॉट के रूप में विकसित किया है। अत: सप्ताह के अंत में यहां बड़ी संख्या में पर्यटकों का आवागमन लगा रहता है। पारिवारिक भ्रमण हो या दोस्तों के साथ ट्रिप, यह स्थल दोनों के लिए उपयुक्त है।

केटुंगा धाम :

बानो खंड में स्थित केटुंगा धाम एक बहुत ही महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के पुरातत्व विद्वानों ने इस स्थान की बुद्ध काल की भूमि के रूप में पहचान की है। केटुंगा धाम में बुद्ध की कई मूर्तियां पाई गई हैं। यह कहा जाता है कि मौर्य सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद पाटलीपुत्र लौटने के दौरान इन मूर्तियों की स्थापना कराई थी।

केटुंगा धाम, जिसे बाबा भोलेनाथ के मंदिर के लिए भी माना जाता है, वह पौराणिक विरासत को दर्शाता है। किवदंती है कि यहां भगवान भोलेनाथ स्वयं भूरूप में प्रकट हुए थे और उनकी ऊंचाई बढ़ती ही जा रही है। तीर्थ यात्रियों और पर्यटकों की सुविधा के लिए प्रशासन ने मंदिर से नहर

तक शेड का निर्माण कराया है। पुराने भवन की मरम्मत करते हुए पर्यटकों के लिए समुचित अन्य सुविधाएं भी उपलब्ध कराने की कार्रवाई की जा रही है।

भैरव बाबा पहाड़ी :

सिमडेगा से लगभग 10 कि.मी. की दूरी पर स्थित भैरव बाबा पहाड़ी मूल रूप से एक गुफा है, जो कि सिमडेगा प्रखंड के फुलवा टांगर नामक गांव में है। गुफा का आकार एक मानव शरीर के रूप में है।

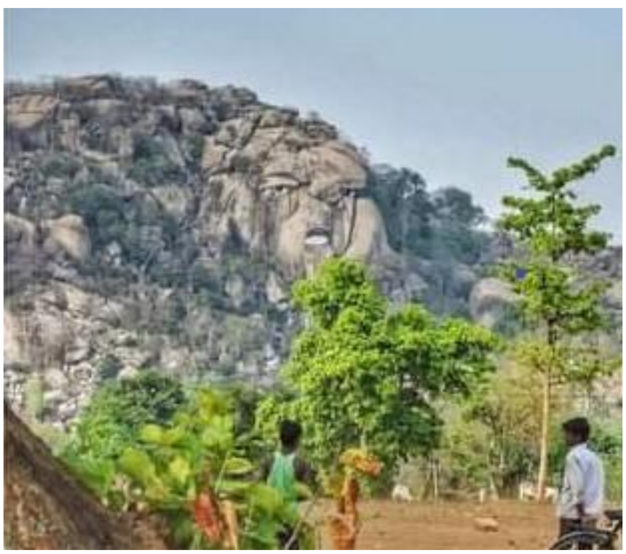

यहां बड़ी संख्या में भक्त सुबह से ही कतारबद्ध होकर गुफा के अंदर विराजमान भगवान भोलेनाथ, गजानन (गणेश जी) और बजरंगबली हनुमान की पूजा अर्चना करने पहुंचते हैं। स्थानीय लोगों की भैरव बाबा के प्रति गहरी आस्था है और उनका मानना है कि भैरव बाबा के दरबार में सच्चे मन से मांगी गई सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। आज भी प्रत्येक शुक्रवार को धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन होता है और अभी भी श्रद्धालु 'सोशल डिस्टेंसिंग' का पालन करते हुए, पहाडी गुफा में विराजमान भगवान के विग्रहों के समक्ष माथा टेक कर सुख, शांति और समृद्धि की कामना करते हैं।

भैरव बाबा पहाड़ी गुफा में मकर सक्रांति के अवसर पर वर्ष 2000 से बड़े स्तर पर धार्मिक उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर मकर सक्रांति मेला भी लगाया जाता था। इस अवसर पर देश की जानी-मानी भजन मंडलियां अपने आर्केस्ट्रा सहित अन्य कार्यक्रम प्रस्तुत करती रही हैं। लेकिन पिछले दो वर्षों से कोविड - 19 के प्रकोप के कारण मेले का आयोजन नहीं किया गया। सिर्फ सादगी के साथ धार्मिक अनुष्ठान कार्यक्रम किए गए थे।

हमें यह जानकारी देते हुए मंदिर समिति के सदस्य श्री कौशल राज सिंह देव ने बताया कि सिमडेगा के तत्कालीन वनपाल (रेंजर) आनंद झा को स्वप्न में भैरव बाबा दिखाई दिए थे,
जिसके बाद उन्होंने उक्त गुफा को खोज निकाला। साथ ही, उन्होंने इसकी जानकारी बीरु गढ़ के पूर्व राजकुमार श्री दुर्ग विजय सिंह देव को दी। भैरव बाबा पहाड़ी गुफा का आकार मानव शरीर की तरह देख कर, श्री दुर्ग विजय सिंह देव ने ग्रामीणों के साथ पंचायत की और वर्ष 2000 से ही मेला लगाने का निर्णय लिया।

केलाघाघ बांध :

जिला मुख्यालय से लगभग चार कि.मी. की दूरी पर स्थित, केलाघाघ बांध सिमडेगा में छिन्दा नदी पर सबसे सुंदर बांध है। यह केलाघाघ बांध में एक पठार है जहां एक छोटा और सुंदर पार्क मौजूद है। इस बांध का जलमार्ग कई पहाड़ियों से घिरा हुआ होने के कारण, बांध के आसपास की देखने लायक प्राकृतिक खूबसूरती यहां आने वाले पर्यटकों को बहुत ज्यादा आकर्षित और प्रभावित करती है। यह सिमडेगा का वो खास स्थल है, जहां आप अपना पूरा दिन छिंदा नदी और उसके आसपास फैली खूबसूरती के साथ बिता सकते हैं।

केलाघाघ डैम

मुख्य शहर से सटे केलाघाघ पर्यटक स्थल पर रेलिंग के किनारे जालीदार घेरा, सोलर हाई मास्क लाइट, पार्किंग, प्रसाधन सुविधाएं, पर्यटन पुलिस चौकी, कैंटीन जैसी सुविधाएं स्थापित की गई है।

जिला प्रशासन ने मोटर नौकायन और पैरासेलिंग (दो सीट की) की सुविधा उपलब्ध कराई है। केलाघाघ बांध के निकट ही राज्य पर्यटन निगम द्वारा एक होटल का निर्माण भी कराया जा रहा है। जहां जल्दी ही पर्यटकों के लिए आवास के साथ ही भोजन आदि की सुविधा उपलब्ध हो सकेगी। सिमडेगा अधिसूचित क्षेत्र समिति केलघाघ बांध से शहर में पीने के पानी की आपूर्ति कर रही है। एक 'रिफ्रेशिंग' एहसास के लिए सिमडेगा के पर्यटन आकर्षणों में आप केलाघाग डैम पर घूमने का प्लान बना सकते हैं। यह एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। शहर भ्रमण के दौरान आप यहां जरूर आएं।

बनदुर्गा :

बनदुर्गा शक्ति की देवी, दुर्गा माता का पवित्र स्थान है। बोलबा प्रखंड के अंतर्गत मालसाड़ा गांव में एक पहाड़ी पर आदिशक्ति मां भुवनेश्वरी अपने वनदुर्गा रूप में विराजमान है और यह वनदुर्गा जागृत मंदिर के रूप में भी प्रसिद्ध है। यहां लोग मनोकामना पूरी करने के लिए देवी दुर्गा से प्रार्थना करते हैं। यह जगह एक प्राकृतिक पिकनिक स्थल भी है। मंदिर में मां भगवती वनदुर्गा एवं देवी मंदिर के सामने शिरोमणी हनुमान विराजमान है। जिले के आसपास के श्रद्धालुओं के साथ ही यह मंदिर झारखंड सहित बिहार, ओड़िशा, छत्तीसगढ़ के भक्तों की अपार श्रद्धा से जुड़ा है। वनदुर्गा मंदिर का संचालन स्थानीय भक्तों द्वारा किया जाता है। विशेष रूप से चैत्र, अश्विन एवं रामनवमी पर्व का विशेष आयोजन किए जाते हैं। आस्था है कि सच्चे मन एवं श्रद्धा से की गई मनोकामना को मां बनदुर्गा पूर्ण करती है। मन्नत पूरी होने पर भक्तों द्वारा मां को बकरे की बलि अर्पण करने की प्रथा हैं। नवरात्र के मौके पर नौ दिनों तक बलि पूजा रोक दी जाती है और पुन: विजयादशमी से बलि पूजा प्रारंभ कर दी जाती है।

मंदिर का इतिहास:

एक स्थानीय बुजूर्ग मां वनदुर्गा मंदिर की स्थापना से जूड़े तथ्यों की जानकारी देते हुए कहते हैं कि मालसाड़ा व टैंसेर के जमींदार स्व. लालू नारायण सिंह के स्व. काका केसरी सिंह जी दुर्गा माता के अनन्य भक्त थे। वह जंगल में घूम-घूम कर पाषाणों पर सिंदूर व चंदन लगा कर मां की आराधना किया करते थे। इसी क्रम में उन्हें एक दिन मालसाड़ा शंख नदी के साथ लगी पहाड़ी पर स्थित जंगल में सरई के पेड़ पर देवी की पाषाण प्रतिमा मिली थी। जिसे वह

पूजा अर्चना करने के लिए गांव में स्थित अपने आवास पर ले गए थे, किंतु अगले दिन वह प्रतिमा उसी पेड़ के नीचे मिली। ऐसी घटना दो रात चली तो, इसके बाद गांव वालों ने उसे वहीं स्थापित कर दिया और मिट्टी व खपड़े का मंदिर बनाकर माता की पूजा अर्चना करने लगे। सबने मिल कर इसे वनदुर्गा नाम दे दिया।

मंदिर में सर्वप्रथम पुजारी के रूप में स्व. मणि पाहन सिंह को रखा गया था। शायद सन् 1985 में मंदिर का पुनर्निमाण कराकर इसे पक्का बनाया और विधि विधान पूर्वक पूजा संपन्न कराई गई थी। उसके बाद तो मंदिर का निरंतर विस्तार किया जा रहा है।

स्थानीय लोगों द्वारा मंदिर का संचालन करने के बाद भी इसके विकास में शासन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वनदुर्गा मंदिर क्षेत्र में हाई मास्क लाईट तथा स्ट्रीट लाईट की स्थापना, फूल और प्रशाद के स्टाल, पेय जल, अवागमन के लिए सुलभ साधनों के साथ स्वच्छता तथा जन प्रसाधन सुविधा का निर्माण आदि को विकसित किया गया है। अब यहां मंदिर में विवाह, मुंडन एवं कथा-कीर्तन जैसे अन्य कार्यक्रम भी सम्पन्न कराए जाते हैं। वर्तमान में मंदिर में पाहन गजेन्द्र सिंह के द्वारा देखरेख की जा रही है।

यहां कैसे पहुंचेंगे : सिमडेगा शहर से मंदिर की दूरी लगभग 45 कि.मी. है। सरकारी बस, ऑटो रिक्शा अथवा निजी वाहनों से वनदुर्गा तक पहुंचा जा सकता है।

दानगद्दी :

सिमडेगा जिले के बोलबा प्रखंड में ही शंख नदी पर अवस्थित प्रसिद्ध पर्यटन स्थल दानगद्दी सैलानियों को, खासकर नए साल के दिन, पिकनिक के लिए आकर्षित करता रहा है। दानगद्दी में चारों ओर प्राकृतिक सौन्दर्य के मनोरम दृश्य भरे पड़े हैं।

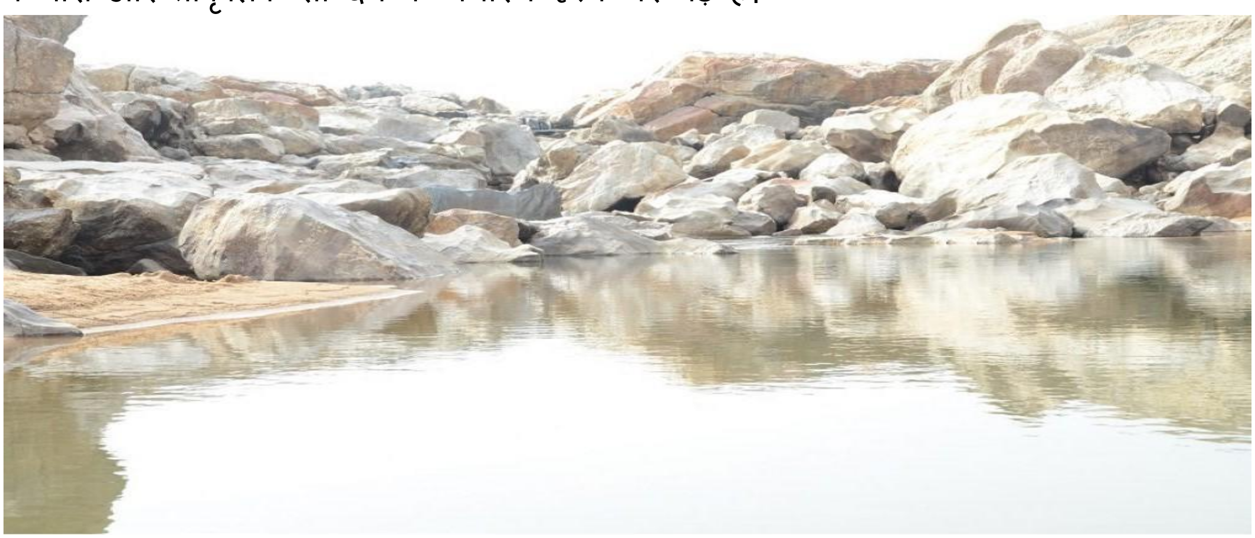

यहां की नीली-सफेद चिकनी चट्टानें, ऊंचे-ऊंचे टीले, झरने, विशाल बालू की रेत, चारों ओर हरे -भरे ऊंचे पहाड़, पंछियों का कलरव लोगों के मन को मोह लेता है। बताया जाता है कि वर्ष 1954 में दानगद्दी में मकर संक्रांति मेले का आयोजन हुआ था। समय के साथ इस जगह की

प्रसिद्धि फैलने लगी, जिसकी अगुवाई बोलबा के सरदार बासु सेनापति के परपोता धर्मदेव सेनापति ने किया था। 1962 में शिवलिंग की स्थापना कर महाशिवरात्रि पूजा एवं मेला लगाया गया। यहां का शिव मन्दिर आस्था का केंद्र है। सैलानी मन्दिर में भोलेनाथ के आगे माथा टेक कर आशीर्वाद लेते हैं।

प्रशासन की ओर से दानगद्दी में वाच टावर, हाई मास्क लाईट की स्थापना, पीने के पानी की सुविधा, स्वच्छता और सफाई की व्यवस्था, जन प्रसाधन सुविधाओं का निर्माण किया गया है। दानगद्दी में पर्यटकों की सुविधा के अनुसार विकास के कार्य होने से अब वहां हर दिन स्थानीय ग्रामीण खान-पान की दुकान लगा रहे हैं, जिससे उनकी कमाई भी हो रही है अर्थात सरकार की नीति के अनुसार 'पर्यटन से रोजगार'।

पाकरटांड़ की झील और कोबांग डैम :

सिमडेगा मुख्यालय से करीब 30 कि.मी. की दूरी पर स्थित पाकर टांड प्रखंड के बसंतपुर में सुखाधार झील पर्यटकों को प्रभावित करते रहे हैं। क्षेत्र में स्थित उंची पहाड़ी और उनके बीच से निकल कर चट्टानों पर फैलता शंख नदी का पानी दर्जनों झरने बनाता है। कलकल करते यह झरने और मनोरम पहाड़ियों के बीच अठखेलियां करती जलधाराएं पर्यटकों को बरबस अपनी ओर आकर्षित करती हैं। कई वर्ग मीटर तक फैले चट्टानी मैदान और उसके ऊपर से अठखेलियां कर उतरती शंख नदी काफी सुंदर लगती है। यहां नववर्ष पर उत्सव के रूप में दो दिन के 'आदिवासी दिवस' का आयोजन किया जाता है, जो पर्यटकों और आस पास के लोगों के लिए पिकनिक मनाने जैसा है।

भंवर पहाड़ :

सिमडेगा में कई ऐसे पर्यटन स्थल हैं, जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। इनमें से एक है, भंवर एक चट्टानी पहाड़ी। यह पहाड़ी हरी-भरी वनस्पतियों और खेतों से भरी हुई है। कुछ नया

अनुभव करने वाले जिज्ञासु इस स्थल पर आ सकते हैं। खासकर फोटोग्राफर और प्रकृति प्रेमी के लिए यह स्थल काफी ज्यादा मायने रखता है। भंवर पहाड़ कोलेबिरा खंड में है।

यहां मधु मक्खियों के बहुत सारे छत्ते (भंवरवाड़ा) पाए जाते थे और इसे इस कारण भंवर पहाड़ कहा गया था। स्थानीय बुजुर्ग ने बताया कि प्राचीन युग में इन मक्खियों को सैनिकों के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। स्पष्ट शब्दों में कहें तो यह प्रवेश मार्ग था और दुश्मन सेना आक्रमण के लिए आती थी, तब गुलेल से इन छत्तों को तोड़ दिया जाता, जिनसे मधु मक्खियां निकल दुश्मन की सेना पर टूट पड़तीं और उन्हें भागना पड़ता था। पहाड़ी पर छोटे घरों में रहने वाले ग्रामीणों को प्रकृति ने गुलतिची के फूल का उपहार दिया है।

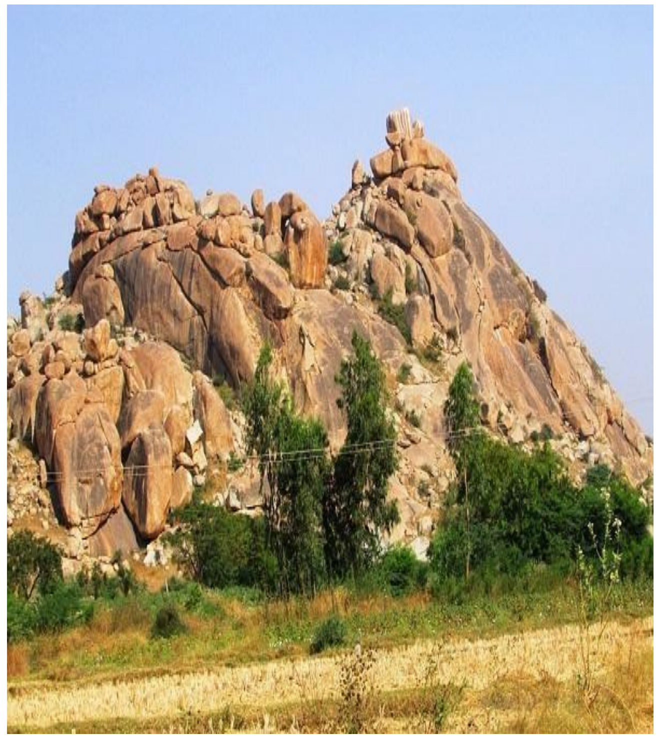

भंवर पहाड़, जो पौराणिक विरासत का प्रतीक है। कहते हैं कि देश की आजादी से पहले तक युद्ध के दौरान शत्रुओं को मार गिराने में भंवर पहाड़ का अहम योगदान रहा था। जिला प्रशासन द्वारा भंवर पहाड़ की विरासत तथा पहाड़ को पर्यटक स्थल के रूप में पहचान दिलाने हेतु अभिज्ञात किया गया है। भंवर पहाड़ के मनोरम दृश्य को देखने एवं पहाड़ की खासियत से जन-जन को अवगत कराने के उदेश्य से उसे संवारने का कार्य धरातल पर उतारा गया है। हमारी यात्रा के दौरान शासन द्वारा भंवर पहाड़ के सौंदर्यीकरण का कार्य किया जा रहा था।

छोटी पहाड़ी पर पत्थरों के बीच एक छोटा प्राकृतिक तालाब मौजूद है। सभी मौसमों में पानी से भरा तालाब यह देखना आश्चर्य की बात है। भंवर पहाड़ पर गुफा के भीतर लगभग 15 से 16 डिग्री तापमान होने से, पर्यटक एक प्राकृतिक वातानुकूलित तंत्र महसूस करते हैं।

एस्ट्रोटर्फ हॉकी स्टेडियम:

सिमडेगा को राज्य में 'पालना हॉकी' के रूप में भी जाना जाता है। इसी धरती ने ओलंपिक में शीर्ष प्रतिनिधित्व करने वाले कई खिलाड़ी पैदा किए हैं। सिल्विनस डुंगडुंग पूर्व ओलम्पियन हैं, जिन्होंने 1980 में मास्को ओलंपिक में हॉकी में स्वर्ण पदक जीता था। 1972 की गर्मियों के ओलंपिक में कांस्य पदक विजेता माइकल किंडो एक और ओलम्पियन है। भारतीय महिला हॉकी टीम की कप्तान रही असुंता लाकड़ा सिमडेगा की ही बेटी हैं।

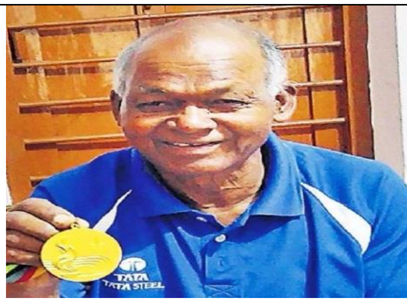		
पूर्व ओलम्पियन सिल्विनस डुंगडुंग	ओलंपिक में कांस्य पदक विजेता माइकल किंडो	भारतीय महिला हॉकी टीम की कप्तान रही असुंता लाकड़ा।

हाल ही में, इस क्षेत्र के उभरते हुए हॉकी खिलाड़ियों को प्रोत्साहन देने के लिए शहर को एक 'एस्ट्रोटर्फ हॉकी स्टेडियम' का उपहार मिला है।

इसके अलावा अन्य खेलों के नाम पर फुटबॉल और क्रिकेट के लिए अल्बर्ट एक्का स्टेडियम नाम का एक आउटडोर स्टेडियम भी है। (एस्ट्रोटर्फ स्पोर्ट्स ग्रुप की एक अमेरिकी सहायक कंपनी है जो खेल में सतहों पर खेलने के लिए कृत्रिम टर्फ का उत्पादन करती है। मूल एस्ट्रोटर्फ उत्पाद 1965 में मोनसेंटो द्वारा आविष्कार किया गया एक शॉर्ट-पाइल सिंथेटिक टर्फ -तृखाच्छादित भूमि- था।) यहां आने वाले पर्यटकों को स्टेडियम ज़रूर लाया जाता है।

यहां कैसे पहुंचेंगें ?

वायु मार्ग से : पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार के अनुरोध पर नागरिक उड्डयन मंत्रालय द्वारा आरसीएस- उड़ान के तहत, ओडिशा के राउरकेला में हवाई अड्डे का निर्माण किया गया और यह जनवरी, 2023 से परिचालन में है। यहां से सिमडेगा की दूरी मात्र 50 कि.मी. है। यहां से नई दिल्ली, कोलकाता, भुबनेश्वर के लिए सीधी सेवाएं उपलब्ध हैं।

एक प्रमुख हवाई अड्डा बिरसा मुंडा हवाई अड्डा, रांची है। रांची से रामरेखा धाम लगभग 137 कि.मी. की दूरी पर है। यहां से, पर्यटक पूर्व-बुकिंग के आधार पर टैक्सी या सरकारी बसें ले सकते हैं। रामरेखा धाम पहुंचने में चार से पांच घंटे का समय लग सकता है।

रेल मार्ग से : निकटतम रेलवे स्टेशन राउरकेला, ओडिशा में स्थित हैं, जो रामरेखा धाम से 95 कि.मी. की दूरी पर है।

सड़क मार्ग से : राम रेखा धाम सिमडेगा शहर से लगभग 26 कि.मी. दूर है। झारखंड के अलावा, छत्तीसगढ़ तथा ओडिशा राज्य सरकारों द्वारा भी नियमित बस सेवाएं संचालित की जाती हैं। निजी बस संचालकों की बसें भी पर्यटकों को आरामदायक यात्रा करने में मदद करती हैं। बस की सवारी भी पर्यटकों को चकित करती है क्योंकि क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता देखने को मिलती है।

खरीदारी : अच्छे दर्शनीय स्थलों की यात्रा और अन्य गतिविधियों के बाद, एक दिन कुछ थोड़ी खरीदारी करना स्वाभाविक है। सिमडेगा एक आदिवासी क्षेत्र है। अपने और परिवार या अपने दोस्तों के लिए यादगार स्वरूप स्मृति चिन्ह अथवा कोई अन्य उपहार खरीद सकते हैं। अत: यहां के प्रसिद्ध हस्तकला और हथकरघा के उत्पादों की खरीदारी के लिए दुकानों और बाजारों की सैर करने का अलग ही आनंद है।

सिमडेगा क्षेत्र में मई से अगस्त- सितम्बर तक मौसम गर्म और उमस भरा रहता है। वर्षा का मौसम भी दमघोटू और बादलों से घिरा हुआ होता है। कुल मिलाकर नवंबर से फरवरी तक मौसम सुहावना होता है। इसलिए यहां घूमने का सबसे अच्छा समय अक्टूबर से फरवरी को माना जाता है।

*संप्रति : कैप्टन प्राण रंजन प्रसाद भारतीय सेना के तोपखाना रेजिमेंट के भूतपूर्व अधिकारी हैं। 1971 के युद्ध में भाग लेने के बाद, 10 वर्षों तक सेना में रहे। तत्पश्चात, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण में बतौर मुख्य सुरक्षा अधिकारी एवं सूचना प्रौद्योगिकी एवं संपदा प्रबंधन प्रभारी रहे हैं। पिछले कई वर्षों से 2021 तक राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एन सीआरटीसी) में सलाहकार। **'अतुल्य भारत' में निरंतर अनुसंधानपरक योगदान।**

अनंतनाग में ताजा बर्फबारी के बाद बर्फ से ढके श्रीनगर-बनिहाल रेलवे ट्रैक पर चलती ट्रेन यह है कश्मीर के काजीगुंड बारामूला रेलवे लाइन का बर्फबारी के दौरान संचालन : फोटोग्राफर श्री सुंदर लाल सुनहरी द्वारा प्रस्तुत चित्र।

अतुल्य भारत

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार
7वां तल, चन्द्रलोक बिल्डिंग,
36, जनपथ, नई दिल्ली -110001

पर्यटक हैल्पलाइन 1800111363 लघु कोड : 1363 [24X7]